શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5

December '07

સમૂહ શારદા પૂજન
અને અન્નકૂટ દર્શન





પ્રકાશક: શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



अहमदाबाद मदिर में रंग महोल श्री घनश्याम महराज के पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन



जेतलपुर मंदिर में अन्नकूट दर्शन



जेतलपुर मंदिर में मासंत यज्ञकी पूर्णाहुति में आरती उतारते हुए पू. पी.पी. स्वामी और यजमान परिवार



सर्वोपरि छपैया धाम में निर्माण हेतु उपयोगी क्रेईन का पूजन करते हुए पू. ब्रह्मचारी रामकृष्णानन्दजी स्वामी



कांकरिया मंदिर में मारुतियज्ञ की पूर्णाहुति की आरती उतारते हुए प.पू. वड़े महाराजश्री



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरूपदासजी
(महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 1 अंक : 8 दिसम्बर -2007

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	३
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	४
३.	हे युवानो !!	४
४.	कांकरोली मंदिर में श्रीनाथजी भगवान चमत्कार दिखाकर प.पू. लालजी महाराजश्री को पुष्प माला दिये	५
५.	वाणी विवेक	६
६.	आधुनिक युग में शिक्षापत्री	८
७.	लारव वर्ष की लड़ाई	१०
८.	सत्संग बालवाटिका (१) सभी प्रगति का मूल (२) विचार कर दान करो	१३
९.	भक्तिसुधा (१) श्रीहरि के वचन का लोप करने से दुःखी हुए संत (२) ओला की रतन बा (३) कब श्रीहरि को हंसते देखूं (४) साबरमती नारायणघाट की महिमा (५) करजीसण में श्रीहरिकी अद्‌भुत लीला	१५
१०.	प्रश्नपेटी	१९
११.	समाचार वृत्तांत	२०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



तन्त्रीश्री की तरफ से.....

आध्यात्मिक यात्रा में भगवान को प्राप्त करने के मार्ग में गुण-अवगुण की पीड़ा होती रहती हैं। सत्संग, कथा, माहात्म्य ज्ञान की वातों को सुनने से गुण आतें हैं। लेकिन सांसारिक प्रभाव बढ़ने से थोड़ा बहुत जो गुण होते है ये भी गायब हो जाते है और अवगुण दिखाई देने लगता है। सामने की स्थिति सामान्य हो लेकिन देखने में फर्क हो तो गुण में अवगुण दिखाई देने लगता है। यही स्थिति हो तो भगवान में भी दोष दिखाई देने लगता है। श्रीहरिने वड़ताल के १४ वें वचनामृत में स्पष्ट निरूपण किया है कि कुपात्र जीव को भी भगवान में या संत में यदि गुण दिखाई देने लगे तो उसके पुण्य का उदय हो रहा है ऐसा समझना चाहिए। जिसने वर्णाश्रम धर्म का लोप किया था उसका जो उसे पाप लगा था उन सबका नाश हो जाता है, जिससे वह पापी जीव अतिशय पवित्र हो जाता है। इसके बाद भगवान के स्वरूप में उस जीव का चित्त लगने लगता है और समाधिनिष्ठ हो जाता है। जो पुरुष धर्मशास्त्र प्रमाणानुसार वर्णाश्रम धर्म का पालन करता है उसे सभी लोग धर्मवाला जानते हैं। लेकिन भगवान या भगवान के संत का जो द्रोह करता है उसके सभी पूर्व के पुण्य भस्म होकर राख हो जाते हैं। वह तो पांच महापाप करने वाले महापापी से भी अधिक महापापी है। भगवान में मायिक भाव आवे तो गुण-अवगुण रहे लेकिन भगवान की सम्पूर्ण लीला को दिव्य समझे तो दिव्य भाव आवे। भगवान की मूर्तियां भी साक्षात् प्रगट स्वरूप हैं। भगवान के स्थान पर विराजमान धर्मवंशी आचार्य में अक्षरधाम के अधिपति साक्षात् विद्यमान रहते हैं। भगवान आचार्य के स्वरूप में विचरण करते हैं, सेवा अंगीकार करते हैं, प्रसन्न होते है, नाराज होते है, आज्ञा करते है, इनके कर्ता भी भगवान हैं। इनमें कभी मायिक व्यावहारिक दृष्टि नहीं रखना, इसके साथ ही भगवान के संतो में भी मायिक दृष्टि न रखे। जो भगवान को प्रसन्न करना चाहते है वे संपूर्ण निर्दम्भी होकर निर्दम्भ भाव रहित ऐसे संतो में तथा भक्तों में एवं सत्संग सेवा परायण निष्ठावाले भक्तों में मायिक दृष्टि न रखे तो उस व्यक्ति से वर्णाश्रम धर्म का लोप भी दुआ हो तो, पांच प्रकार के महापाप भी किया हो तो दृष्टि मात्र से उसके पाप जल जाते हैं। तथा सतत भाव की स्थिती होने से समाधिनिष्ठ हो जाता है। इस सत्संग के प्रति अपने में यदि दिव्य भाव हो तो सर्वत्र गुण ही दिखाई देगा। यदि अपने में मायिक भाव होगा तो अवगुण दिखाई देगा। आज नहीं तो कुल सत्संग में से उसका पतन हो जायेगा। इसलिए अध्यात्मिक मार्ग में इस वात का सतत अनुसंधान रखना चाहिये। सामने वाले की चिंता छोड़कर स्वयं की चिंता करनी चाहिये। स्वान्तः सुखाय कार्य करना चाहिए।

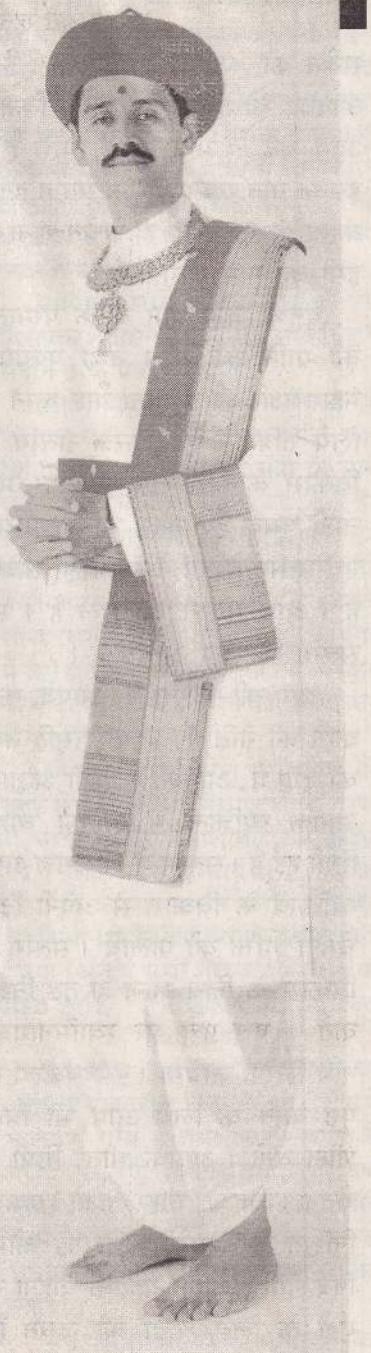
तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वरूपदास का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

नवम्बर-२००७



१. ऊँझा श्री स्वामिनारायण मंदिर में (बहनो के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण, वहीं से स्कूल के भूमि पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु पधारे, वहीं से करजीसण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पधारे।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा पधारे, वहीं से श्री दशरथभाई माधवलाल चौधरी के "श्री नरनारायण ट्रेक्टर" में पधारे ।

७. श्री डाह्याभाई मणीलाल पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, राणीप ।

८. नारायणपुरा मंदिर श्री हनुमानजी महाराज के पूजन प्रसंग पर पदार्पण, अहमदाबाद मदिरमें श्री हनुमानजी का पूजन अर्चन अपने हाथों से किये, जमीयतपुरा श्री प्रभा हनुमानजी के आरती करने पधारे ।

९. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में समूह शारदापूजन अपने हाथों से धूमधाम के साथ किये ।

१०. श्री वसंतलाल त्रिभोवनदास टांक के यहाँ पदार्पण, पालड़ी ।

११. विहार गाँव में श्री अंबालाल वालीदास पटेल के यहाँ महा पूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. से १५. नाथद्वारा में अहमदाबाद के सत्संगी युवकों का स्नेह संमेलन अपनी उपस्थिति में संपन्न किये ।

१७. आकस्न्द (ता. बायड) गाँव में पदार्पण ।

१८. पंढरपुर(ता. कड़ी) श्री वालजीभाई जादवभाई पटेल के यहाँ "जपयज्ञ" प्रसंग पर पदार्पण ।

१९. अंबापुर(जि. गांधीनगर) गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२०. हलवद (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ज्ञान शिबिर प्रसंग पर पदार्पण ।

२१. अहमदाबाद मंदिर में संत दीक्षा बिधी अपने हाथों से किये ।
नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में "तुलसी विवाह" प्रसंग पर पदार्पण । रात्रि में मकनसर पदार्पण ।

२२. मकनसर(ता. मूलीदेश-मोरबी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२३. श्री वल्लभभाई पोपटभाई खीचड़ीया, श्री महेन्द्रभाई वल्लभभाई खीचड़ीया, श्री रमेशभाई रवजीभाई दोंगा तथा श्री अरविंदभाई दोंगा के यहाँ पदार्पण, बापूनगर ।

२४. मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर युवा शिबिर अपनी शुभ अध्यक्षता में संपन्न करके सुरेन्द्रनगर पाटोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कथा-पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देने पधारे।

२५. श्री हेमंतभाई शशिकांतभाई काछिया के यहाँ-पदार्पण गुलबाई टेकरा ।
श्री भूपेन्द्रभाई केशवलाल अमीन के यहाँ पदार्पण सोला रोड ।
श्री कालूभाई गोविंदभाई गजेरा के यहाँ पदार्पण, एप्रोच-बापूनगर ।
श्री हिरेनभाई प्रवीणभाई पटेल के यहाँ पदार्पण - वस्त्रापुर ।
श्री नंदकुमार एन. पटेल के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।

२६. सिध्धपुर नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने हाथों से धूमधाम के साध संपन्न किये .

२८. भराडा (ता. ध्रांगध्रा-मूलीदेश) श्री शामजीभाई पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

३०. फोटडी (कच्छ) गाँव मं पदार्पण ।

हे युवानो !!

- शास्त्री स्वामी रामानुजदासजी (कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर कोठारी)

हे युवानो आप सदा अपने प्रति सचेत रहना। सचेत का मतलब ? आप कहाँ हैं ? आपका ध्येय क्या है ? आप कितना आगे बढे ? आप कितने पीछे हैं ? इसका ज्ञान रखना, ध्यान रखना इनके कारणों को जानना ही सचेत रहना है, इसी का नाम जागृती है ।

मनुष्य जन्म प्राप्त करके परमात्मा की प्राप्ति स्मी ध्येय तथा पूज्यपाद महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये रात्रिदिन एक करके सत्संग के विकास कार्य में लग जाओ । आप ज्ञानी युवक हैं । आप भक्ति पारायण एवं सत्संग के रंग में रंगाये हुए सक्रिय है । आप सत्संग का मूल है । सारे सत्संग के आप आधार है ।

आप की चाहना में, आपके काम करने की रीति में, आपकी सृष्टि तरफ की दृष्टि में, आपकी तेजस्वी श्रद्धा में आपके व्यक्तित्व में अनेंको चाहना छिपी हुई है । सत्संग में भी आज अपने व्यक्तित्व के विकास से अपनी दिव्य चेतना शक्ति को फैलायें । सत्संग के विकास के लिये आज ही दृढ निश्चय करो । पत्ते-पत्ते पर स्वामिनारायण नाम लिखा जायेगा । इस संकल्प को पूरा करने के लिये आप भी क्रिया शील वनो । आपके भीतर छिपी हुई चेतना शक्ति को बाहर लाओ । एकवार निश्चित ही आपके भीतर नई कोपल निकलेगी । कारण यह कि चाहना स्मी वृक्ष के लिये श्रद्धा की जरुरत है । युवाधन ही सत्संग की सच्ची संपत्ति है । सत्संगी युवक मंडल तथा युवान संत इस संप्रदाय का धन है । जो देश या संस्था आगे आई है या विकास हुआ है, उस में मूल कारण युवाधन है।

स्पार्टा एवं रोम कितने मजबूत थे ? कितनी बडी संस्कृति का विकास किया था फिर भी उसका नाश हो गया । कारण यह कि जिस देश के युवा आशावान हों, उत्तम विचार वाले हों, उत्तम ज्ञान मिल रहा हो वहाँ की संस्कृति का नाश नही होता वहाँ के देश का उत्तरोत्तर विकास होता है । जहाँ के युवा दिशा विहीन होजांय तो निश्चित ही वहाँ के देश कां नाश होगा।

आज अपनी भारतीय संस्कृति में तथा अपने सत्संग में ऐसा ही दिखाई दे रहा है । युवा ही सत्संग में या संस्था में तथा देश में विकास किये है । परंतु आज का युवा सत्संग से मुहमोडता जा रहा है । अपने में लघुता का अनुभव कर रहा है । क्या यह विचारने योग्य नहीं है ?

सत्संग की संपत्ति केवल मंदिर या सुख सुविधा अथवा सौंदर्य नही है क्षेत्रफल भी नहीं है सत्संग की संपत्ति युवा है । क्षेत्रफल की दृष्टि से जापान बहुत छोटा देश है, फिर भी युवानो की कार्य कुशळता के कारण सारे विश्व में टेक्नोलोजी के विषय में सबसे आगे है। मरुस्थल में वसा हुआ इजराइल देश युवाओं के देश प्रेम के कारण आज हरियाली से भरी खेती से सुसज्जित है । आज अपने सत्संग में भी ऐसे युवा की जरुरत है जिससे सत्संग में विकास हो सके ।

१९२१ से १९४७ तक भारत में ऐसे युवा हुए की जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश को स्वतंत्र कर सके । युवा शक्ति का महत्व पूर्ण योगदान रहा है । इसी तरह श्रीहरि के समकालीन समय में भी संप्रदाय में युवा संत एवं युवा हरिभक्तों का विकास में पूर्ण योग दान रहा हे ।

युवा यदि सत्संग में मिलकर सत्संग का कोई भी कार्य करने में तत्पर हों तो बहुत बडी शक्ति की धारा वह पड़ेगी ।

युवा एक होकर संघ में रचनात्मक कार्य में आगे बढ़े तो निश्चित ही समाज को नई प्रेरणा दे सकते हैं । कितनी वार युवा अपनी शक्ति का दुस्मयोग करते हैं, जैसे स्कूल में, नौकरी में हडताल करते हैं या पथ्थर मारा करते हैं, यद्यपि यह भी शक्ति प्रदर्शन हैं लेकिन यह शक्ति का दुस्मयोग है । इसी शक्ति का योग्य दिशा में उपयोग करें तो बहुत बडा रचनात्मक कार्य हो सकता है । इसी तरह हमारा युवा सत्संग भी कहीं मार्ग भूल गया है, विचारने की जरुरत है ।

आप भी दृढता से विचार करना कि आपका एक सुस्वप्न आने वाली नई सत्संग पीढी का पथ प्रदर्शक बनेगा । आपका एक सत्कर्म प्रगति का एक कदम है । आपका एक उत्तम

कांकरोली मंदिर में श्रीनाथजी भगवान चमत्कार दिखाकर प.पू. लालजी महाराजश्री को पुष्प माला दिये

संकलन : शास्त्री स्वामी हरिओंप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने अपने मुख से स्वयं कहा है कि मैं धर्मकुल में साक्षात् विराजमान हूँ। इस परावाणी का चमत्कारिक परिचय ता. १४-११-०७ के दिन कांकरोली मंदिर में हुआ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अ.सौ.प.पू. गादीवालाश्री तथा प.पू. १०८ लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री नाथद्वारा राजस्थान अपने मंदिर में युवा शिबिर के कार्यक्रम में तीन दिन तक विराजमान थे। इस प्रसंग पर प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा कांकरोली मंदिर में द्वारिकाधीश, श्रीनाथजी भगवान के दर्शनार्थ ता. १४-११-०७ की संध्या काल में पधारे थे। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीकी धर्ममर्यादा का ध्यान देकर व्यवस्थापकोने थोड़े समय के लिये दर्शनार्थियों को अंदर आने के लिए मना कर दिया था। उस समय ७-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री श्रीनाथजी भगवान का दर्शन करते करते श्रद्धा भाव से मुख्य पुजारी से भगवान के हाथ का पुष्प मांगा। लेकिन पुष्टि मार्गी परम्परानुसार भगवान की धारण की वस्तु दर्शनार्थीयों को देने का नियम नहीं है। इसलिये पुष्प नहीं दिया गया।

लेकिन मुख्य पुजारी का नियम श्रीनाथजी भगवान को मंजूर नहीं था। क्योंकि श्री स्वामिनारायण भगवान के पुत्र स्वयं पधारे थे। इसलिये भगवान के हाथ का पुष्प स्वयं नीचे सरक गया। प.पू. लालजी महाराजश्रीने पुनः कहा, पुजारीजी भगवान का पुष्प मुझे दीजिये। इतने में भगवान के कंठ का हार भी नीचे उतर गया। वहाँ उपस्थित व्यवस्थापक एवं पुजारी तथा कांकरोली मंदिर के आचार्यजी इस दृश्य को देख रहे थे। उस समय उन्हें ख्याल आया कि ये तो भगवान स्वामिनारायण के पुत्र हैं। इन्हें भगवान पुष्प माला देना चाहते हैं। इसलिए तुरंत मुख्य पुजारी ने प.पू. लालजी महाराजश्री को पुष्प माला एवं पुष्प छड़ी अर्पण की गयी। भगवान धर्मकुल में साक्षात् विराजमान है, इसकी प्रतीति उस समय सभी को हुई। लेकिन इस प्रकार के स्वरूप का दर्शन कभी कभी देते हैं। कांकरोली मंदिर के व्यवस्थापक तथा शिबिर में आई हुई बहनों ने इस प्रकार का चमत्कारीक एवं अलौकिक दिव्य दर्शन करके अपने जन्म को सार्थक समझी थी।

प्रयत्न सत्संग को आबाद करने में सहायक होगा। परंतु आप में दो विचार सृष्टि है।

आप में सतत कुरुक्षेत्र चलता रहता है। आपके भीतर प्रथम मैं (मन) को होता है कि जो आज है उसका उपभोग करले, कल किसने देखा है। जब कि दूसरी तरफ मैं (आत्मा) को विचार आता है नहीं नहीं .....

आज यदि जगत के पंच विषय में रचेपचे रहेंगे तो कल हमारा अच्छा होगा ? मन हंमेशा संसार की तरफ-आनंद भोग-विलास में लगा रहता है मन परमात्मा की तरफ, कल्याण की तरफ प्रेरित करता है। आप के अंतःकरण में श्रेय एवं प्रेय का द्वन्द चलता रहता है। श्रेय को अपना उत्तम मार्ग मानकर उसी पर चलने का दृढ निश्चय करना चाहिये।

आज प्रतिदिन स्वयं को कहिये कि हम सदा अपने लिये जागृत रहेंगे। सत्संग के लिये महाराज द्वारा बताये गये पथ पर चलेंगे। नंद-संतो के प्रयत्न को तथा पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री के संकल्प को सिद्ध करने के लिये कटिबद्ध रहेंगे। उनके आदर्श को जीवन में उतारकर श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करने के लिये प.पू.आचार्य महाराजश्री जो रात दिन गाँव-गाँव, घर-घर जाकर पदार्पण करते है, उत्सव युवक मंडल की स्थापना, वार्षिकोत्सव या शिबिरो में जाकर लोंगो को प्रेरणा देते है, उसी तरह हम भी उन्हें प्रेरणा की मूर्ति मानकर उनके कार्य में सहयोगी बने।

वाणी विवेक

- शास्त्री स्वामी धर्मकिशोरदास गुरु
स.गु. महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी
(प्रयागराज मंदिर के कोठारी)

शब्द में स्वभाविक शक्ति रही हुई है, मामुली शब्द की भी थोडी बहुत असर होती है, तो फिर सज्जन पुरुष के शब्द की असर तो सामान्य शब्द करता ज्यादा हो तो वह स्वभाविक है । इस में भी वर्तनशील संतो भक्तों के शब्दो की तो बात ही क्या करें ? उनके शब्द तो प्रभावशाली व वजनदार होते है ।

पूरी दुनिया में ३,९५० भाषाएं व बोलियां है, इसमें सबसे ज्यादा बोलीया भारत में है, भारत में कुल ८४५ बोलिया बोली जाती है, दुनियामें ६२५ करोड़ लोग ३७५० भाषाओं में वाणी का उपयोग करते है, वाणी में खूब ताकत रही हुई है । एकबार मुख में से निकलने के बाद वह वापस आये ऐसी शक्ति नहीं है । इसलिए समझदार व्यक्तिको स्नेहपूर्वक वाणी का उपयोग करना चाहिए ।

यह आध्यात्म जगत है इसलिए जागृति यहाँ महत्व की है, छोटा सा शब्द भी उथल-पुथल कर देने की शक्ति रखता है । अर्थात् शब्द वह परमाणुं बोंब है, दुध में मीली शक्कर जैसे दूध को मधुर बना देती है और दूध की भगोनी (बर्तन) में नींबू की चार-पाँच बुंद मिलते ही जैसे दूध को फाड देता है । बस ! वैसे ही आध्यात्म जीवन में एक शब्द भी तीव्र जाग्रती ला देता है । और भौतिक जगत का एक शब्द भी जागृत व्यक्ति को अंधकार में ढकेल देता है । आध्यात्मिक मार्ग हो या व्यवहारिक शब्दो की असर दोनो मार्ग में होती है और वह एकबार का प्रसंग उनके जीवन में हंमेशा के लिए यादगार प्रसंग बन जाता है । अगर वह शब्द नेगेटिव होतो जीवन को अधोगति के मार्ग में ढकेल देता है मगर वह शब्द पोजीटिव हो तो मुक्ति के पथ पर प्रगति करने लगता है ।

शिक्षापत्री नामक ग्रंथ के ऊपर नजर करें तो स्वामिनारायण महाप्रभु ने २० वें व २०१ वें श्लोक में स्पष्ट लिखा है कि मेरे आश्रित कभी भी गाली (अपशब्द) बोले नहीं और अज्ञानी जीव गाली दे तो सामने गाली न दे, धर्म में रहकर बोलने की बात का अर्थ ही यह होता हे कि किसी को भी अपशब्द दिल दर्द करे ऐसे वचन न बोले.

हमारे संप्रदाय के महान योगीवर्य सद्गुरुश्री गोपालानंद स्वामी बात करते है कि एकबार भगवान दत्तात्रेय ने साध्य देवो को कहा था कि "हे साध्य देव ! क्रोध युक्त ऐसी वाणी न बोले । कारण कि ऐसी वाणी तो इस लोक के प्रति पुरुष के मर्म स्थल की जो हड्डियां, हृदय तथा प्राण इन सबको जला देती है । इस कारण धर्मवाला पुरुष दूसरे को जला दे ऐसी रुखी वाणी कभी न बोले, तो वाणी कैसी बोले ?

मनुष्य का हृदय तो काँच के बर्तन की तरह है, जरा भी हाथ से धक्का लगे अथवा हाथ से गिर जाए तो तुरंत टूट जाएगा । इसिलिए वाणी का उपयोग करते समय बहुत ध्यान रखना चाहिए अगर शब्द बोलने मे जरा भी विवेक न होतो क्या परिणाम आयेगा यह हम दृष्टांत द्वारा जाने, ऐसी कडवी दूषित वाणी से मोत भी हो, सकती है कारावस भी हो, और कडवी वाणी किसी के मन में लग जाए तो आत्महत्या भी कर सकता हैं ।

अक्षरानंद स्वामी एक बात करते थे एक लखु नाम का दर्जी था वह पटेल के घर कपड़े सीलने गया । पटेल की घरवाली ने दर्जी को बैंगन दिया । लखु ने पटले के लड़के को कहा मेरे घर पर यह बैगन दे आओ, मेरी पत्नी को यह कहना कि दोपहर में बैंगन की सब्जी बनाए इसलिए लडके ने कहा कि यह सब्जी बनाना, घरवालीने दूसरी सब्जी बना दी थी, इसलिए बैगन की सब्जी नहीं बनायी थी, अब दोपहर में तो लखु बैगन का चिंतन करता करता गया और भोजन करने बैठा और जब थाली देखी तो बैगन की जगह भिंडी की सब्जी ! तुरंत लखु का दिमाग गया ज्युज उड गया और पूछा बैगन की सब्जी क्यों नहीं बनायी, तब घरवाली ने कहा भिंडी की सब्जी बनायी इसलिए नहि बनायी तब क्रोधावेशमें लखु वाणी का विवेक खो बैठा और बोल बैठा ! अरे रांड ! मेरा कहना न मानना हो तो पटेल के कूएं में जा गिर मर क्या मुँह बताकर खडी है ? ऐसी कठोर और कलेजे को चीर डाले ऐसी वाणी सुनकर पत्नी को दिल में बात चुभ आई तुरंत गाँव के बाहर पटेल के कूएं में जाकर गिर पड़ी ! जिससे उसकी मृत्यु हो गयी । पुलिस को पता चलते ही लखु को गिरफ्तार करके मुंबई ले गई और बारह वर्ष की उसे सजा हुई । ऐसा ही दूसरा प्रसंग देखें तो ख्याल आयेगा ।

जब भारत राजाओ का राज्य था । तब कोई गढवी या कवी आकर खुद की वाणी से राजा की प्रशंसा करते जिससे राजा खुश होकर ईनाम के तौर पर लाखो रुपये देते थे । इसका कारण वाणी की मधुरता थी और कोई बोली का उपयोग करके किसी का अपमान करे तो कभी सामने वाला व्यक्ति डण्डा लेकर हड्डियां तोड़ भी ड़ाले ।

एक बुनकर बोलने में बिलकुल भी विवेक नहीं था जिसके कारण उसे लोग कहते थे कि तेरी जीभ बढई नहि तो कोई तेरि हड्डिया खोखली कर देगा, बुनकर का धंधा होने के कारण एक कीमती शाल बनाकर दिल्ही में बादशाह को भेंट दी शाल देखकर सुल्तान तो खुश हो गया और खजानची से लाखो रुपये देने का हुक्म दिया। फिर बादशाह ने बुनकर को पूछा अरे भाई ! इतनी महंगी शाल बुनी है परंतु तूने कहा तो नहि कि क्या काम में ले ? ऐसा सुनकर कोई भी विचार किये बिना बोला।

बड़े बादशाह हो तो इतना भी ध्यान नहीं ? यह शाल मैं इसलिए लाया हूँ कि आपकी मृत्यु हो तब आपकी कबर के ऊपर ओढाने के काम आयेगी। सुनते ही बादशाह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ गया। इसलिए तुरंत हुक्म दिया ''सेनापति'' इस नालायक को अभी ही तोप के मुँह पर बांधकर उडा दो। तुरंत तोप के मुँह पर बांधकर बारूद का गोला फोडा जिससे बुनकर के शरीर के चिथडे निकल गए। और विवेक बिना के शब्दो से पूरे महाभारत का सर्जन होता है। पारिवारिक सम्बध टूट जाते है हम महाभारत में दृष्टि करे तो ख्याल आयेगा कि।

शब्द के मारे मर गए, शब्द से छोड़े राज।
जिसने शब्द बचालिए, उसके सरे काज॥

इस पंक्ति में कवी का कहना है कि शब्द के कारण अनेक राजाओने खुद के राजपाट छोड़ दिये, महाभारत में कितने प्रसंग आते हैं कि राजा लोग राज्य का त्याग करके बन में चले गए, जिसका कुछ कारण खुद के परिवार के लोगो के सुनने पड़ते थे और कई कारण खुद के वचन के कारण थे शरीर में लगे बाण से ज्यादा हृदय में लगी (अविवेक भरी वाणी) घाव बहुत भयंकर होती है कारण की शरीर में लगे बाण की पीड़ा तो दवा लगाने से मिट जाएगी परंतु कलेजे में लगी घाव हमेशा सताती रहेगी।

मयदानव नामक दैत्य ने इन्द्रप्रस्थ में अपना माथा मारा ऐसी रचना की कि जहाँ जल हो वहाँ स्थल दिखे और जहाँ स्थल हो वहाँ जल दिखे। ऐसी भूल-भुलैया के कारण हस्तिनापुर का युवराज दुर्योधन पानी में गिर गया उस समय पाण्डव की पत्नी द्रोपदीजी झरोखे में बैठी थी उन्होने यह दृश्य देखा जिससे विवेक खो बैठी और हंसते-हंसते बोल पड़ी ''आखिर अन्धे के तो अन्धे ही होंगेन''। बस ! इतने से शब्द दुर्योधन के कलेजे में चुभ गए और इसका बदला लेने का यह संकल्प किया। फिर कपट से पांडवो को जूआ में हराकर द्रोपदीजी को जीत कर चीरहरण करने के लिए दुःशाशन के पास द्रोपदीजी के वस्त्र खिचवाए थे।

इसलिए ही तुलसीदासजीने अपनी साखी में लिखा है कि हमेशा मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

''तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजात
सहु ओर
यही वशिकरन मंत्र है, तजिये वचन
कठोर''

तुलसीदासजी कहते हैं कि मधुर व विवेक भरी वाणी बोलने से हर प्राणी मात्र को आनंद आता है लोगो को वश करने के लिए मीठी वाणी वशिकरन मंत्र है जैसे कई मंत्र साधना करते है कि वेद के मंत्र बोलते है तो इनमे जरा भी ह्रस्व, दीर्ध मात्र जरा भी चूक जाओ तो उसका परिणाम विपरीत आयेगा। ऐसे कितने ही इतिहास बन गए है।

वाणी कैंची का काम भी करती है और सूई का भी परंतु कई लोगो की वाणी कैंची जैसी होती है वह बाप बेटो के संबंधो को अलग कर देती है अनेक पति-पत्नियो में गलत काना-फूसी करके उनके सुखी-जीवन मे दरार कर देती है।

और कई लोगो की वाणी सूई की तरह होती है जिन-जिन पिता-पुत्र का न बनता हो उनको खुद की विवेक युक्त वाणी से समाधान कराके आपस में मिला देती है - जो -जो पति-पत्नी आपस में डिवोर्स लेने के लिए तैयार हो गए हों उनके भी विवेक से समझाकर एक करके सुखपूर्वक गृहस्थाश्रम चलाने को तैयार कर देते है - जिन-जिन परिवार वालो में आपसी झगड़े हों, ऐसे परिवारो को इकठ्ठा कर देती है। तो प्रसंग सुनकर विचार करना मेरा नम्बर कैंची मे है या सूई में ?

वचन ऐसा बोलो कि सामने वाले व्यक्ति को बुरा न लगे, विवेकता पूर्वक वचन बोलो।

अंधे को अंधा कहे, लगे कडवा वेण
धीरे रहकर पूछिए, कैसे गए तोरे नेन

कितने ही लोग की ऐसी आदत होती है कि व्यक्ति को कुछ कहना हो तो सीधा बोलेगा जिससे सामने वाले व्यक्ति को बुरा लगे। ए अंधे ! ए काणे ! ए लूले ! ए बहरे वगेरे नाम लेकर उसके हृदय में घृणा की दरार बना देता है उसी व्यक्ति को धीरे से विवेकतापूर्वक शांति से पूछिये कि हे सूरदास जी आपकी आँखो की ज्योत कैसे चली गयी तो सामने वाला व्यक्ति शांति से जवाब देगा दुःखी भी नही होगा। और वाणी से कैसा भी स्वभाव वाला व्यक्ति हो तो वह पहचान में आ जाता है कि यह मूर्ख है कि सज्जन व्यक्ति ! और वाणी को कंट्रोल (काबू) में रखने से व्यक्ति दिन-प्रतिदिन प्रगति करता है। इसलिए अंत में इतना ही कि वाणी का उपयोग सोच-समझकर करे।

आधुनिक युग में शिक्षापत्री

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारायणभाई पटेल (अहमदाबाद)

इस भौतिक युग में विज्ञान ने खूब प्रगति किया है । फिर भी मानव परमतत्व परमात्मा को समझ नहीं सका। हिन्दू सनातन धर्म को, वेदो को, परमात्मा संबन्धी ज्ञान को यथार्थ रूप से समझाजाय तो जीवन में कुछ बाकी नहीं रहता, परमात्मा उसे घर बैठे सकल समृद्धि दे देता है ।

आज के युग में ''ऊर्जा बचाओ'' सब से बडा प्रश्न है । ऊर्जा का विन प्रयोजन उपयोग भविष्य में मानवजाति के लिये हानिकारक सिद्ध होगा । आज के वैज्ञानिक इस से चिंतित होते हुए भी समाधान ढूंढ नहीं पा रहे है । फिर भी उत्पादन बढाते ही जा रहे है । परिणाम ऐसे है कि ग्राम्यजन हों या शहरीजन हों सभी के लिये विजली रूपी ऊर्जा की महनीय आवश्यकता है, यद्यपि दोनो में वैपरीत्य है नगरो में बिजली का अतिरेक है तो गाँवो में विजली का अभाव है । कहाँ कितनी किसकी आवश्यकता है यह विचारणीय है ।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने २५० वर्ष पूर्व मानवजाति पर अत्यधिक चिंतन करके शिक्षापत्री की रचना की थी । श्लोक ४७ में उन्होंने आज्ञा की है ''हमारे सत्संगी नित्य सूर्य उगने से पूर्व जागे, पश्चात् दैनिक कृत्य करके व्यावहारिक कार्य करें । श्लोक ५४ तथा ८० में अतिशय यत्न करके दिन की निद्रा का त्याग करने की वात की है । श्लोक १७७ में दिवा निद्रा का निषेध किया है । इस में मात्र कारण यह कि सूर्य से जो दैनिक ऊर्जा मिलेगी तो अन्य प्रकाश की जरूरत नहीं पड़ेगी । दिन में जितनी प्रवृति हो सके करनी चाहिए । दिन में सोकर अपनी ऊर्जा शक्ति का ह्रास नहीं करना चाहिये । सूर्य इस ब्रह्मांड को ऊर्जा शक्ति प्रदान करने वाला सेवक है । स.गु. देवानंद स्वामी कीर्तन में लिखते है -

सूरज सर्वने प्रकाश आपे,
दमडी न पडे देवी जोने ।
वगर दामे वाय वायरो,
ते केशव कसणा केवी जोने ॥

आज का विज्ञानिक अभी Solar Energy का ख्याल कर रहा है । जब कि श्रीहरि यह पहचान अपने आश्रितों को दो सौ वर्ष पूर्व दे दिये हैं । इतना ही नही स्वयं ऊर्जा शक्ति के लिए बाल्यावस्था में मुक्तिनाथ पुण्य क्षेत्र में सूर्यनारायण की उपासना की और उनका साक्षात्कार किया । ऐसे शक्ति के प्रदाता सूर्य को हिन्दू शास्त्र ''धगधगता आग का गोला'' ही नहीं बल्कि सूर्यनारायण भगवान के रूप में मानते हैं । जीव प्राणी मात्र में ऊर्जा शक्ति के लिए सूर्योपासना की बात हमारे शास्त्रों में अक्षरशः वर्णित है । श्रीहरि ने ८४ वें श्लोक में सूर्यनारायण के उपासना की आज्ञा की है ।

आज के युग में ऊर्जा शक्ति मात्र, जल, वायु, तेज (सूर्य) से उत्पन्न होती है । धर्म शास्त्रों में इन तीनो का वर्णन शक्ति के रूप में किया गया है - जिसमें जल वरुण देव, वायु-वायुदेव, तेज-सूर्यनारायण के रूप में अनादि काल से पूजित हैं । पंच महाभूत की बात जो शास्त्रों में हजारो वर्ष पूर्व वर्णित है उसे आज विज्ञान स्वीकार करता जा रहा है, धर्म शास्त्र कहते है कि जीव के शुभ-अशुभ कर्मो के साक्षी उपरोक्त सभी देवता होते हैं । इसलिए अपने कर्म का फल भोग जीव मात्र को स्वयं करना ही पड़ता है ।

धर्म के सच्चे स्वरूप को पहचानकर, शरीर को कल्याण के मार्ग पर लगावे, वास्तु शास्त्र के अनुसार मकान का निर्माण हो, उद्योग के बदले खेती तथावृक्षो की तरफ ध्यान दें, शास्त्र की मर्यादा में भोग भोगना चाहिए । पशुओं को प्रेम से पालन करके उन्हें जगत के कल्याण कार्यो में लगाना चाहिए इससे मानव को ऊर्जा का उपयोग कम करना पड़ेगा । सत्संगी को प्रातः सूर्योदय से पूर्व एवं सायं सायंकालीन आरती करके दैनिक कृत्य करके प्रभु की लीला चेष्टा का चिंतन गान करते हुए रात्रि शयन करने से आध्यात्मिक ऊर्जा का भंडार हो जायेगा

पुनः अन्य ऊर्जा की जरुरत नहीं ।

सम्पूर्ण दिन में सूर्य की ऊर्जा - गर्मी - प्रकाश का हम जितना उपयोग किये है इसकी कीमत क्या होगी यह आप जानते हैं । इस तरह जिंदगी को ८०-९० वर्ष तक कितनी ऊर्जा का उपभोग करते हैं । भगवान ने हमें जो मनुष्य देह दिया है उसकी कीमत समझकर, उस परमात्मा के प्रति कृतज्ञ भाव रखकर सदा कुछ समय निकाल कर अवश्य भजन करना चाहिए । ऐसा न करने से अपना जीवन वृथा चला जायेगा ।

अभी बुद्धि जीवियों ने शोध किया कि एवरेष्ट की चोटी पर जो जाते हैं वे अपनी कुछ पहचान छोड़कर आते है, परिणाम स्वस्प वहाँ अब गन्दगी होने लगी है । श्रीहरि शिक्षापत्री श्लोक ३२ वें में कहते हैं किसे कहाँ थूकना है । बड़ी सावधानी सूक्ष्मता से इसका निरूपण किया है । सच्चा सत्संगी थूकने की बात क्या वह कचरा भी डालने का विचार नहीं करेगा । लेकिन हिमालय में जाने वाले सभी नीलकंठ वर्णी नही होते जो सर्वत्र वातावरण को शुद्ध कर सके । जिससे पर्यावरण की रक्षा हो ।

जो अपने ऊपर कष्ट सहन करके पर्यावरण की रक्षा करे वह परमात्मा है। जो पर्यावरण के ऊपर अत्याचार का उपभोग करके अपना रक्षण करे वह मानव है । नीलकंठ वर्णी स्प में श्रीहरि जो पर्यावरण का रख रखाव किये वह औदाहार्य है । आज की पीढी को धर्म का सच्चा मार्ग समझ में आजाय तो उनका भविष्य अवश्य तंदुरस्त बनेगा । अपनी आध्यात्मिक संस्कृति को मजबूत बनाने के लिये धर्मकुल में उत्पन्न गुरु की शरण लेनी चाहिए । अपनी संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति जो मात्र भौतिक वादी है, सायद वह विनाश के पंथ पर ले जाने वाली बनेगी ।

आधुनिक युग में डॉक्टरों का मन्तव्य है कि प्रायः रोग का मूल कारण मानसिकतनाव है । मानवजीवन में स्पये एकत्रित करने में, मान प्रतिष्ठा में, अहंममत्व में मानसिक तनवा का अनुभव कर रहा है । जिसके पास धन नही है वह धन एकत्रित करने में तथा जिसके पास है वह रक्षण करने में तनाव का अनुभव करता है ।

मानव स्पये के पीछे खत्म होता जा रहा है । वह मात्र ऊपर से मुस्कान भरता है । अपना जीवन स्वार्थमय बनाता जा रहा है । नीद की गोली लेकर रात विताता है । विटामिन की गोलिया खाकर शरीर को स्वस्थ रखना चाहता है । इसी मानसिक तनाव से ही ब्लडप्रेसर, हृदय रोग इत्यादि मानसिकता के विकार होने से उत्पन्न होते है । लेकिन मानव यह नहीं जानता कि उसकी मृत्यु तो निश्चित है । तो धन-दौलत, नौकर-चाकर, मान-प्रतिष्ठा लेकर क्या करना ? संत एवं शास्त्र भारपूर्वक कहते हैं कि श्रीहरि की आज्ञा में रहकर जीवन को सुखमय समझना चाहिए । प्रभु के भजन को शास्वत मानकर संसार की असारता का सदा ध्यान रखना चाहिए । परमात्मा का आश्रय लेकर अपनी दैनिक चर्या करनी चाहिए । जब आपका आश्रय प्रभु होंगे तो निश्चित ही प्रभु आपका रक्षण करेंगे । अहं का भाव छोड़ना होगा । जहाँ अहं रहता है वहाँ श्रीहरि नहीं रहते । वहाँ सहायता नहीं करते । जिसका नाश होनेवाला है उसके पीछे भागने की क्या जरुरत । हरिभक्त तो भगवान की भजन करके अपने जीव का कल्याण करते हैं ।

इस कलिकाल में श्रीहरि द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री भूत-वर्तमान-भविष्य तीनो काल में प्रत्येक जीव मात्र के लिए हितावह है । सभी जीव को सुख देने वाली है । श्रीजी महाराज की आज्ञा को जन-जन तक पहुँचाने की परमावश्यकता है । इसके पालन से इस जीव के सभी प्रश्न हल हो सकते है । जो जीवन में सुख चाहते हैं वे महाराज की आज्ञा में अपना जीवन पावन करें ।

धनुर्मास में मंत्र लिखने की नोटबुक मुफ्त में मिलेगी

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पवित्र धनुर्मास प्रसंग पर "श्री स्वामिनारायण महामंत्र" की धुनी होती है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन बुक धनुर्मास के निमित एक मास पर्यंत बिना मूल्य के दीजायेगी । इसका सभी सत्संगी लाभ ले सकते है ।

लाख वर्ष की लड़ाई

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

देव एवं दनुज इस तरह तो दोनो एक ही गोत्र के है, फिर भी दोनो के बीच आदि काल से संघर्ष होता रहा है। असुरों को ऐसा लगता रहा है कि भगवान नारायण देवों के पक्षपाती है। देवता सत्ता एवं शक्ति के भूखे हैं। बुद्धिशाली भी हैं। राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या थी। कोई राक्षस युद्ध में मरजाता तो उसे जिला देते। यह बात देवों के लिए खतरनाक थी। इसलिये वे बार-बार गुरु वृहस्पति को कहा करते। इस तरह देव पक्ष की संख्या बल घटता जायेगा। असुरों की संख्या बल बढता जायेगा। यद्यपि असुरो को देवों से ही बल प्राप्त होता था। महादेव भगवान आशुतोष की उपासना करके अपार शक्तिपाते या ब्रह्मा की उपासना करके अतुलनीय शक्ति वाले हो जाते थे। लेकिन उनका तप भी सराहनीय होता था। वर्षो तक तप करके अपने उपास्य देव को प्रसन्न कर लेते थे। देव प्रसन्न होकर इच्छित वरदान देने के लिए सामने आते और कहते मांग बरदान क्या चाहिए ?

हिरण्य कशिपु का ही उदाहरण लीजिए। उसने ब्रह्माजी की आराधना करके, प्रसन्न करके हमें आपकी सृष्टि में से कोई न मार सके इस तरह का वरदान मांगा। किसी स्थल के अंदर या बाहर मृत्यु न हो, दिन या रात्रि में मृत्यु न हो, किसी हथियार से न हो, भूमि पर या आकाश में मृत्यु न हो, मनुष्य या देव या किसी प्राणी से मृत्यु न हो युद्ध में हमारा कोई प्रति द्वन्द्वी न हो। सृष्टि की रचना का एकमात्र मैं स्वामी बनूं।

ब्रह्मा ने कहा तथास्तु ! आपने जो मांगा हमने दिया, अब जाकर खाओ - पीओ लहर करो।

अब इसे कैसे मारा जायेगा, यह चिंता इन्हे सालने लगी। इतना बल शाली हिरण्यकशिपु हुआ कि सर्वत्र त्राहि त्राहि होने लगी। उससे भी एक बुद्धिमान असुर ब्रह्मा की उपासना करके बल को प्राप्त किया था। जिसका नाम था कुंच्यासुर। शक्ति-सत्ता होते हुए भी उसके मन में एक महत्वाकांक्षा बाकी थी।

या तृष्णा बलवंति महाजग,
रांक रुरावकुं नाच नचावे।
देव अदेव याहिकरी नाचत,
नाचत इन्द्र सुरेश कहावे।
स्वर्ग पाताल सबे तृष्णावश
तीनहि लोक में आन किरावे।
ब्रह्ममुनि तृष्णा बडी डाकन,
ज्ञान विना तजी दूर न जावे॥

देव-दनुज सभी को तृष्णा स्मी राक्षिसिनी पकडी हुई है। वह बलवान शक्तिशाली असुर ने विचार किया कि हमारे पास सब कुछ है, हमसे बलवान कोई नहीं है। मैं समर्थ हूँ। स्वर्ग, मृत्यु, पाताल लोक में मेरा ही राज्य चल रहा है। फिर भी मेरी एक महेच्छा है, जिसे पूर्ण करने के लिये तप करना आवश्यक है। ब्रह्मदेव की आराधना करके इप्सित फल प्राप्त करना है। यह विचार करके घनघोर वन में जाकर, अन्नजल का परित्याग करके इन्द्रियों को संयमित करके, सिद्धासन पर स्थिर होकर, ब्रह्माजी की उपासना आरम्भ की। इतनी घोर आराधना की कि उसके शरीर के भीतर जीवजन्तुओने रहने की जगह बना ली थी, फिर भी अपने तप से विचलित नहीं हुआ।

ब्रह्मदेव उसकी तपस्या से द्रवित हो गये। उसके पास आये और कहने लगे हे पुत्र ! मैं तुम्हारे दुष्कर तप से प्रसन्न हूँ, तूं वरदान मांग। पहले उसके शरीर के ऊपर जल छिड़ककर स्वस्थ किये। बाद में स्वस्थ शरीर एव स्वस्थ मन से उसने ब्रह्मा की प्रार्थना की। ब्रह्माने वरदान मांगने को कहा।

कुंच्यासुर ने कहा प्रभु ! हम अमर हो, हमे कोई मार न सके ऐसा वरदान दीजिए। ब्रह्माने कहा ब्रह्म के सिवाय किसी के अधीनस्थ मृत्यु नहीं है। मेरी भी मृत्यु निश्चित है। जब मेरी मृत्यु निश्चित है तो अमरत्व का वरदान नहीं दे सकता अमरत्व का वरदान तो जो अमर होगा वही दे सकता है।

तो आप ऐसा करिये कि मेरी पूरी शरीर पर अभेद्य कवच पहना दीजिए जोकिसी से किसी भी परिस्थति में भेद न हो सके। जीर्ण-शीर्ण भी न हो। प्रजापति पुनः विचार करने लगे कि यह वरदान वैसा ही हैं। अतः पुनः उससे कहे कि इसके अलांवा कोई अन्य वरदान मांग।

कुंच्यासुर ने कहा आप हमें एकहजार कवच न दीजिए। लेकिन एक शर्त है कि जो एक हजार वर्ष तक अन्न-जल का त्याग कर कठोर तप किया हो, वह विना विध्न के एक हजार वर्ष तक युद्ध करे तब मेरा एक कवच टूटे। कवच टूटने के बाद एक हजार वर्ष तक यदि युद्ध न चला हो तो कवच अपने आप

जुड जाय। दूसरी कवच तोडने के लिए जो व्यक्ति हजार वर्ष तक तप किया हो वह सतत पुनः हजार वर्ष तक युद्ध करे तो दूसरा कवच टूटे। इस शर्त के अनुसार मेरे सभी कवच टूट जाने पर अविरत युद्ध चालू रखने पर मुझे पराजित करे तो ही मेरी मृत्यु हो। ब्रह्मा थोडा विचार में पड़े फिर भी अन्त में तथास्तु कहे। इधर कुंच्यासुर में शक्ति का संचार हुआ। चारो तरफ दशो दिशाओं में दिग्विजय करने निकल पड़ा। युद्ध करो या हमारे वश में रहो इस तरह ललकार कर कहने लगा। गर्वोन्नत हो गया। स्वच्छन्दी एवं स्वैरविहारी होकर अपनी वासना को पूर्ण करने के लिये प्रजा को पीड़ित करने लगा। स्त्री वर्ग की कोई सुरक्षा रही नहीं। लोंगो में सुख तथा शांति अदृश्य हो गयी। सर्वत्र भय का वातावरण फैल गया।

असह्य त्रास से परेशान होकर स्वर्ग के सभी देवता ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने कहा हम सब जानते हैं यहाँ भी सभी भय में हैं। इस में तो मात्र नारायण ही हम सभी की रक्षा कर सकते हैं। हम सभी उन्हीं के पास चलते हैं।

ब्रह्मा को आगे करके सभी देव भगवान को निवेदन करने वापस आये। बाद में भगवान विचार करने लगते हैं "विनाशाय च दुष्मताम्" दुष्टों के नाश के लिये मैं अवतार धारण करता हूँ लेकिन इस दुष्ट का नाश वडा कठिन है। इसके नाश के लिये मुझे दो स्वरूप धारण करना पडेगा। उन्होंने माता-पिता को याद किया। धर्मदेव के हृदयाकाश में स्वयं आविर्भूत होकर मूर्ति देवी मां प्रकाशमान हुए। इसके बाद मूर्तिदेवी में से वह तेज बाहर फैल गया वही तेज दो स्वरूप में १६ वर्ष के युवावस्था वाला प्रकट हुआ।

अस्माकमिष्ट देवोऽस्ति नरनारायणो हरिः।
साषाडेशोब्दिको धर्मान्मूर्तोजातो हि वर्णिराट्॥

भगवान का जन्म, कर्म, सभी दिव्य होता है। उनके लिये कोई देश, काल, स्थल बन्धन नहीं कर सकता। भक्त प्रहलाद का दुःख सहन नहीं हुआ इसलिए खंभे से प्रगट होना पडा था। स.गु. नित्यानंद स्वामीने पूछा कि भगवान मनुष्याकृति पहले धारण करते हैं या विना मनुष्याकृति के स्वरूप धारण करलेते है। तब श्रीजी महाराजने कहा उन्हें किसी क्रम की आवश्यकता नहीं होती। वे कभी भी कोई स्वरूप में प्रगट हो सकते हैं।

अहमदाबाद में उत्सव कर रहे थे उस समय आनंदानंद स्वामीने पूछा हे महाराज ! हम नरनारायणदेव का उत्सव उनके जन्म तिथि के अनुसार या नक्षत्र के अनुसार मनाये। आप जैसा कहें उसके अनुसार तैयारी करें। स्वामिनारायणा भगवान कहते हैं कि हे मुनिवर ! भगवान श्री नरनारायणदेव का जन्म फाल्गुन मास में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था। साधरण मनुष्य का जन्म तिथि के अनुसार गिनना चाहिए। लेकिन भगवान का जन्म युवावस्था में होने से नक्षत्र के अनुसार मानना चाहिये। श्री नरनारायण मूर्ति देवी से अवतरे। उस समय उनकी उम्र १६ वर्ष की थी। इसलिये सूर्योदय से स्पर्श किया हुआ अर्यमां नक्षत्र में जन्मोत्सव मनाना।

श्री नरनारयण भगवान का प्रथम जन्मोत्सव अमरलोक में देवताओं ने बड़े धूमधाम से मनाया था। इन्द्रादि देवता भगवान को फूल के झूले में झुलाया था, उसी समय से फूल दोलोत्सव प्रसिद्ध हुआ। भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव तथा श्रीहरि का जन्मोत्सव भूखे पेट उपवास करके मनाते है। लेकिन फूलदोलोत्सव अलग प्रकार से मनाते हैं। श्री नरनारायणदेव भगवान का जन्मोत्सव खा पीकर आनंद के साथ मनाया जाता है। भगवान नरनारायणदेव जगत के जीवों को कल्याण देने के लिए बद्रिकाश्रम में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण करके तप करते रहते हैं। पूरा हजार वर्ष हो गया तब नारायण भगवान कुंच्यासुर को ललकारे, उस समय वह राक्षस सामने आया। भगवान भ्राता नर से कहे कि अब मैं इसके साथ युद्ध करता हूँ, तब तक आप तप करिये। एक हजार वर्ष युद्ध करने पर उसका एक कवच टूटेगा। जब एक हजार वर्ष पूरा हो जाय तो आप तुरंत आजाइएगा। फिर मैं तप करने लगूंगा। इस तरह एक हजार कवच तोडना है। युद्ध में एक क्षण भी विराम हुआ कि टूटा कवच अपने आप जूड जायेगा।

यह ध्यान रखकर प्रथम नारायण भगवान एक हजार वर्ष तक युद्ध किये तो उसका एक कवच टूटा और इसी तरह नर तप किये। यही क्रम से नव सो निन्यानवे कवच को तोड डाले। अब कुंच्यासुर को डर लगने लगा। उसे मृत्यु का भय दिखाई देने लगा। वह युद्ध छोड़कर भाग गया। लेकिन भगवान नारायण उसका पीछा करते गये और सविता के पास जाकर पकड़े। वह सविता देव से प्रार्थना करने लगा हे सविता देव ! आप हमारी रक्षा करें। उस समय नारायण भगवानने कहा हे सविता देव एक हजार वर्ष तप करके एक हजार वर्ष से युद्ध करके आज मरने के किनारे

आया तो आपकी शरण में आ गया, इसे शरण मत दीजिए ।

सूर्यनारायणने कहा हे महाप्रभु ! यह मेरी शरण में आया है, यदि इसकी रक्षा न करुँ तो धर्मभंग होगा । भगवान नारायणने कहा मैं आपका धर्म भंग नहीं करुँगा । मैं दूसरा रास्ता करुँगा ।

मौत को देखकर कौन नहीं डरता । मौत के डर से कुंच्यासुर सूर्यदेव को छोड़ ही नही रहा था । सूर्य जहाँ जहाँ जाते साथ छोड़ता ही नहीं था ।

इतने में एक मौका आया । मर्त्यलोक से किसी राज कन्या ने सवितादेव को संदेश भेंजा कि आप यहाँ पधारे इतने में सूर्यदेव मृत्युलोक में मनुष्य स्त्र धारण करके आये । वह दानवभी मनुष्य स्त्र धारण करके साथ आया ।

वह राजकुमारी स्वतंत्र कक्ष में बैठकर प्रतीक्षा कर ही रही थी कि सूर्यदेव वहाँ पहुँच गये । कन्या चरण स्पर्श की, सूर्य उसे आशीर्वाद देते है और आलिंगन करने जाते हैं कन्या शरमाजाती है । आलिंगन करने से इन्कार करती है पुनः सूर्य कहते हैं हे कन्या तूं संकोच न कर तूं जानती है कि अग्निपुत्र मंत्र द्रष्टा है, इसलिए लक्ष्य चूक सकते नहीं है । आओ आलिंगन करें ।

कुंच्यासुर के मन में एक विचार आया । मृत्यु के भय से बचने के लिए एक सुन्दर अवसर है - इस कन्या के उदर में प्रवेश करजाऊ, ऐसा ही किया । उस कन्या को सुन्दर पुत्र पैदा हुआ । उस बालक की शरीर पर कवच कुंडल था । इज्जत जाने के भय से कन्या ने उस बालक को एक पेटी में बन्द करके कठोर हृदय से अश्व नदी में बहा दिया । ययाति राजा के वंश में किसी अधीरथ नामक वंशज को मिली । बडे कौतुक से उस पेटी को खोला तो उसमें कवच कुंडल युक्त बालक को देख कर बडा प्रसन्न हुआ । अधीरथ को कोई संतान नहीं थी । उस बालक को घर लाया । पत्नी राधा को दिया । राधा खूब प्रसन्न हुई । इसका नाम वसुषेण रखा । यही महारथी कर्ण हुआ ।

महाभारत के सत्तरहवें दिन महावीर कर्ण अपने कवच कुंडल तथा धनुष की पूजा की । सूर्यस्तवन किया । सुवर्णदान किया । मनोमन्थन के बाद राजा शल्य को अपना सारथी बनाया । सभीदान दे दिया था । वाकी कुछ था नहीं । प्रातः काल का समय उसी समय कोई वैतालिक सुवर्ण दान मांगने आता है संयोग वश सुवर्णदान के लिये कुछ शेष नहीं था, मात्र कवच कुंडल में सुवर्ण था, उसमें भी विना विचार किये वह कवच कुंडल उतारकर दे दिया । जो मेरे जन्म के समय से मेरा रक्षक था उसे स्वीकार करो । अब मात्र मेरे पिताजी ही कवचस्मी तेज हैं । भगवान वासुदेव की इच्छा से ही यह कार्य हो रहा था पूर्व के जन्म के युद्ध का अंत आ गया, जो कुंच्यासुर के स्त्र में था आज उसका कवच कुंडल उतर गया ।

शूरवीरता में तथा धनुर्विद्या में अर्जुन से बहुत आगे ऐसा वह कर्ण था । दान में दानवीर कर्ण के स्त्र में सारे जगत में विख्यात हुआ । पृथ्वी के समानउसमें सहन शीलता थी । कौरव पांडव के बीच अनेक योद्धाओं के युद्ध के बाद आमने सामने अंगरराज कर्ण एवं गांडीवधारी अर्जुन आये । अंगराज मंत्र पढकर शरसंधान करते । निवारण के लिये अर्जुन समंत्रक बाण छोडते । दोनो महारथी थे । उनका निशान कभी चूकता नहीं था । भाग्य में क्या होने वाला था । इतने में धनंजय ने ऐसा शरसंधान किया कि कर्ण का रथ जमीन में धंसने लगा । नीचे उतरकर बाहर निकालने का मिथ्या प्रयास करने लगा । बाद में क्रोधायमान कर्ण रथचक्र लेने दौडा । लेकिन सफल नहीं हुआ । बाद में विजय धनुष का संधान किया । अर्जुन की छाती में लगा । अर्जुन के हाथ से गांडीव छूट गया । इसका लाभ लेकर कर्ण पुनःरथ से उतरकर रथ की पहिया निकलाने गया । उसी समय आकाशवाणी हुई की कर्ण रथ की पहिया पृथ्वी निगल रही है । तुम सफल नहीं होगा ।

कर्ण सम्पूर्ण विद्या भूल गया । रथ विद्या, धनुर्विद्या संबंधी सभी मंत्र भूल गया । फिर उसे याद आया श्राप एवं वरदान का लेकिन था वह वीर । उसके चेहरे पर थोडी भी सिकन नहीं थी । दीनता नहीं था । मलिनता नहीं थी । मुख पर तेज निखर रहा था । योद्धा को छाजे इस तरह हिमालय जैसे खडा रहा । सहोदर की बाण वर्षा को सह रहा था । इतने में काल चक्र आ ही गया ।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा कर्ण पुनः रथ में बैठे उसके पहले रौद्र अस्त्र से उसका मस्तक उड़ादो । इतने में वह रौद्रास्त्र को मंत्र से अभिमंत्रित करके बाण संधान किया और शिरः छेदन किया ।

पुत्र की मृत्यु से पीडित सूर्यदेव भी निस्तेज होकर अदृश्य हो गये । आज पांडवो की विजय तिथि थी । फिर भी पांडु पुत्र अपने सहोदर की मृत्यु को ध्यान में रखकर विजयोत्सव नहीं मनाये ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सभी प्रगति का मूल

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

हस्तिनापुर के महान सम्राट कुरुकुल वंशज धृतराष्ट्र की पूरे भारत वर्ष पर धाक थी। उनके सो पुत्र थे। जो कौरव के रूप में जाने जाते थे। उन्हीं के छोटे भाई पांडु के चार पुत्र थे, जो पाण्डवों के रूप में प्रसिद्ध थे। वे १०५ बालक कुमारावस्था में आये तो उनकी छत्रियोचित शिक्षा के लिए भारद्वाज गोत्र के महान आचार्य द्रोणाचार्य को उन सभी के शिक्षागुरुके रूप में राज्य संमान के साथ पदारूढ किया गया था।

शिक्षागुरु द्रोणाचार्य प्रथम थोड़ी-थोड़ी शिक्षा देते, बाद में उसका परीक्षण करते। इस प्रकार शिक्षण देते हुए माफी समय बीत गया, अब वे युवान हो गये तो उन राजकुमारों का परीक्षण करने के लिये एक आयोजन किये।

अभी जो परीक्षा की पद्धति है। लिखित वह पहले नहीं थी। उस समय खुले मैदान में, समूह में सभी के देखते हुए, सभी के सामने जो पास हो वह पास, अन्य नापास। उस समय नकल की प्रथा ही नहीं थी तो पकड़ने का कोई प्रश्न ही नहीं था.

सम्पूर्ण सभा के बीच में आप क्या पढे है, उसका प्रदर्शन करना पड़ता था। पेपर लिखना या जांचना दोनो की आवश्यकता नहीं थी। जब परीक्षा होती उस समय गाँव के अगुआ, प्रजाजन तथा नागरिकों के सामने ही परीक्षा होती। यह पद्धति आज के युग में आजाय तो कितनी शांति हो जायेगी। गुरु द्रोण राजकुमारों की परीक्षा लेने के लिये वृक्ष के ऊपर लकड़ी का एक पक्षी लटकाया, उस पक्षी के मस्तक पर एक काला टीका किया, वह पक्षी हवा में हिलता था। ऐसी स्थिति में उस काले टीके को बींधना था।

परीक्षा प्रारम्भ हुई। युवराज होने के नाते दुर्योधन का नाम पहले आया। युवराज दुर्योधन ! हाँ गुरुदेव ! चलो निशान लगाओ। सभी सभाजन को सुनाते हुए गुरुदेवने कहा सभा दिखाई देती है ? हाँ गुरुदेव ! लकड़ी का पक्षी दिखाई देता है। मुझे तो मोतिया आ गई है इस लिए सबकुछ दिखाई दे रहा है। गुरुने कहा अब तुम बैठ जाओ। तुरंत रेजल्ट आ गया। क्रमशः सभी की परीक्षा हुई। गुरुजी प्रश्न पूछे, शिष्य उत्तर देते। कोई कहता वृक्ष दिखाई देता है, कोई कहता पक्षी दिखाई देता है, इस तरह करते हुए अर्जुन का नम्बर आया। गुरुने पूछा अर्जुन तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है, सभा ? पक्षी ? वृक्ष ? नहीं गुरुदेव ! अर्जुन के उत्तर से सभी सभाजन दुर्योधनादि भीतर ही भीतर मजाक करने लगे। इसे जवानी में अंधापन आ गया है। उसके तीनो उत्तर में एक खूबी छिपी हुई थी। पुनः गुरुदेव ने पूछा तो क्या दिकाई दे रहा है ? गुरुदेव ! मुझे केवल लटकते लकड़ी के पक्षी में काला टीका दिखाई दे रहा है। गुरुदेवने आदेश किया और अर्जुन अपने लक्ष्य पर शर सन्धान किया लक्ष्य को बींध डाला। अब अर्जुन की तालियों की गडगड़ाहट के साथ जयजयकार हो गयी।

मित्रों ! जिसके पास एकाग्रता हो वहीं लक्ष्य बेध सकता है। जिंदगी में जिसे सफलता के शिखर पर पहुंचना हो या कार्य में सफ़लता प्राप्त करनी हो तो अपने कार्य में एकाग्रता अवश्य रखे तभी जल्दी से लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। चाहे वह कार्य अभ्यास का हो या व्यवहार का हो। इसी तरह आध्यात्मिक मार्ग में भी एकाग्रता वाले का कार्य जल्दी सिद्ध होता है। चाहे वह दर्शन की एकाग्रता या जप की एकाग्रता या कीर्तन की एकाग्रता इन सभी में एकाग्रता की परमा वश्यकता होती है। जो भगवान की भजन एकाग्रता से नहीं करते उन्हें भगवान स्वामिनारायण गिलहरी कहा करते थे। धार्मिकता में, आर्थिक स्थिति में, आध्यात्मिकता में जिसे प्रथम क्रम रहना हो वह अपने विचारों को, चित्त को बुद्धि को, विवेक को, विचार को एकाग्रता करे। वही सभी का मूल है। इस को भूलना नहीं चाहिए।

•

विचार कर दान करो

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक शेठ था। वह शेठ सत्संगी था। भक्ति भजन में खूब रुची थी। संत समागम, कथा श्रवण नित्य करता था। उसकी प्रकृति दयालु थी कितने लोगो में अच्छे गुण होते हैं तो कितनो में खराब। उस शेठ को उपकारी प्रकृति उसे दुःखी करदी। उस शेठ का अच्छा व्यापार था। वह कितने माल विदेश से मंगाता था। माल लेने देने तथा विल का हिसाब-किताब करने बार-बार बम्बई जाना

पड़ता था । इसलिये वह शेठ बम्बई में एक बंगला ले रखा था । वह शेठ प्रतिदिन प्रातः पूजा करके समद्र के किनारे धूमते निकल जाता था । उसी समय कड़ाके की ठन्ढी में मछली पकडने वाले दो बच्चों को ठिठुरते देखा, उसे बडी दया आ गयी । बम्बई शहर में जाकर दो कम्बल लिया और उन दोनो को दानक र दिया । लेकिन वे दोनो मछली पकड़ने वाले उस कम्बल का दुस्प्रयोग कर दिये । वह इस तरह कि कम्बल के धागों को निकाल कर मछली पकड़ने का जाल बुन डाले । अपने मछली पकड़ने के धंधे में लगा दिये । मछली पकड़-पकड़ कर व्यापार करने लगे ।

इधर शेठ की परिस्थिति बिगड़ने लगी । उत्तरोत्तर व्यापार में कमी होने लगी इतना ही नही परिवार में नाना विध परेशानियां आने लगीं । सामाजिक तथा आर्थिक ढंग से शेठ परेशान हो गया । शेठ विचारने लगा कि यह किस पाप का परिणाम है, यद्यपि ऐसा अपनी जानकारी में कुछ किये तो नहीं है । क्यों ऐसी विकट परिस्थिति आयी । यह भगवान की इच्छा समझें या हमारी कोई भूल ? वह शेठमंदिर आकर अपने ऊपर आई आपदा को संत केपास रोते हुए कह सुनाया । ऐसी परिस्थिति कैसे सहन हो सकती है । संत आश्वासन देते हैं । भगवान की प्रार्थना करने को कहते हैं । संत कारण जानने के लिये शेठ से कुछ प्रश्न पूछते हैं । लेकिन उचित उत्तर नहीं मिला तो संत ने कहा आपकी दयालु प्रकृति है इसलिए जब दान करिये तब विचार कर करिये, कही गलत जगह दान तो नहीं कर रहे हैं ? बाद में संत ने उस भक्त के सुखार्थ भगवान से प्रार्थना की ।

थोड़े समय के बाद शेठ को पुनः मुंबई बुलाया गया । कुछ दिन रुकना पड़ा । एक दिन वे उसी समुद्र के किनारे धूमने निकले । उस समय जिन दोनों को कम्बल दिये थे उन्हें पुनः ठन्ढी से कांपते देखा तो पास जाकर पूछे क्यों कांप रहे हो । तुम दोनो को कंबल दिये थे, वह क्यों ओढते नहीं हो तब दोनो ने कहा शेठ पुनः कम्बल दिजिये न । पहले जो कम्बल दिये थे वह व्यापार में उपयोग ले रहे हैं । किस व्यापार में ? मछली मारने के व्यापार में । यह सुनतें शेठ के होश उड गये । मैं तो इन्हें ठन्ढी से बचने के लिये दिया था । ए तो दुस्प्रयोग कर रहे हैं । उनसे कम्बल के धागों को लेकर वहीं जला दिया । बाद में शेठ मंदिर आया । संत से पूर्व की वात बताई । तब मूल पकड़ में आ गया । शेठने प्रायश्चित बताया । शेठ पुनः सुखिया होने लगे । व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी ।

मित्रों ! देवानंद स्वामी अपने कीर्तन में विवेक की बात करते हैं ।

''विवेकी नर ने एम विचारी ने जोवुं ।
कुपात्र ने दान देवुं ते बीज बार मां
बीवुं जी ॥

जिस प्रकार रेती में बीज बोना निष्फल होता है । इसी तरह कुपात्र को दान करना भी निष्फल होता है । कुपात्र को समझाते हुए देवानंद स्वमी कहते है कि -

''कामी, क्रोधी, लोभी, लंपट
कुडा बोला कहावे ।
अन्न, वस्त्र, धन तेने आपे ते
शेकी ने बी वावे रे ॥

तो दान किसे दिया जाय ? तो दान देने के लिये दृष्टांत के साथ समझाते हैं ।

''इन्द्रिय पांच सहु मन जीते ते
हरिदास कहावे,
वहाली वस्तु तेने आपे ते अनंत घणी
थई आवे रे, विवेकी नरने
दुर्बल सुदामाए आणी दीधा, मुष्टि तांदुल
मेवा,
कंच महल कर्या सुखकारी सत्पुस्प्रनी
सेवा रे,
द्रोपदी ए निज चीर वधेरी, बांध्या हस्नि
हाथे,
देवानंद कहे भरी सभामां, आव्या
दिनानाथे रे विवेकी नरने..

सुदामाजी केवल तीन मुठ्ठी तंदुल भगवान द्वारिकाधीश को अर्पण किये थे, जिसका फल दूसरी द्वारिका बनी थी यह जगत जाहिर है ।

द्रोपदीने भगवान के हाथ में छुरी से कटने पर अपनी साड़ी पल्लू को फाड़ कर हाथ को बांधी थी, जिस के फल स्वस्प्र भरी सभा में भगवान ने द्रोपदी की चीर हरण में ९९९ चीर बढा कर लाज रखीथी ।

इसलिए मित्रों ! दान की महिमा बहुत बड़ी है । लेकिन पात्र अपात्र को जानकर दान देना चाहिए । अर्थात् ''पात्रता'' एवं ''अपेक्षा'' (आवश्यकता) ए दोनो दान की आंख है ।

इसलिये बिना जानकारी दोनो पात्रता एवं अपेक्षा के दान नहीं करना चाहिये ।

परम पूज्य लालजी महाराजश्री

छपैया मां आप अवतर्या घनश्याम
आपना अवतरणथी आधन्य थयुं गाँव
लालजी महाराजश्री आप जेवा ज भासे
सत्संगी सर्व कहे श्रद्धा विश्वासे
कर तेमना आदर हर घड़ी शुभ काम
हरिने निहाळी भक्तों थाय निष्काम
व्रजेन्द्रप्रसाद एवुं आपनुं शुभ नाम
दर्शन करता सौने हैये थाय हाम.

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

।। भक्तिसुधा ।।

श्रीहरि के वचन का लोप करने से दुःखी हुए संत

- शिष्या सवितावहन गुरु सां.यो. बचीबा
(जेतलपुर हवेली)

मनुष्य के जीवन में सुख दुःख का क्रम चलता ही रहता है। जिसके जीवन में सुख है वह श्रीजी महाराज की कृपा से है। जिसके जीवन में दुःख है वह महाराज की आज्ञा का लोप करने से। श्री स्वामिनारायण महाप्रभु मनुष्यमात्र को सुखी रहने के लिये तथा भवसागर पार होने के लिये अपने हाथों से अत्यन्त अल्पकाय नौकास्म २१२ श्लोकों की शिक्षापत्री लिखे हैं। जो मनुष्य शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करेंगे वे इस लोक में सुखी होकर अंत में अक्षरधाम को प्राप्त होंगे। जो शिक्षापत्री के विपरीत आचरण करेंगे वे दुःखी होंगे।

एक समय श्रीजी महाराज गढपुर में सभा करके विराजमान थे। उस समय महाराज कहे कि खाण गाँव कौन जायेगा ? (ब्रह्मानंद स्वामी के गाँव) यह सुनकर स्वामीने कहा मैं जाऊँ ? महाराज ने कहा हाँ मैं चिठ्ठी लिखकर देता हूँ। आबू के बगल में खाण गाँव है। तब भाई स्वामी को ऐसा लगा कि महाराज मेरी हंसी कर रहे हैं। महाराज दो अक्षर के नाम की चिठ्ठी की कोई जरुरत नहीं, यह तो मुझे याद रहेगा। महाराज ने बहुत कहा तो भी भाई स्वामी नहीं माने और विना चिठ्ठी लिये छ संतो को साथ लेकर निकल गये। आगे सिद्धपुर तक सभी साथ रहे लेकिन भोजन की व्यवस्था न होने से चार संत वापस आ गये। दो संत भाई स्वामी एवं गोविंद स्वामी आगे चले। आबू पहाण पार करके दश-बारह गाँव आगे चले होंगे कि उन्हें किस गाँव जाना है यह भूल गये। एक वट वृक्ष के नीचे आराम करते हुए भाई स्वामीने गोविंद स्वामी से पूछा गोविंद स्वामी ? हम लोग किस गाँव में जा रहे हैं ? तब गोविंदानंद स्वामीने कहा हमें तो ख्याल ही नहीं है। उसी समय कुछ बाबा लोग आये और कहने लगे कि आप लोग भोजन करना चाहते हो तो अभी सदा व्रत चल रहा है, अन्यथा वन्द हो जायेगा। यह सुनकर दोनो संत सदाव्रत में से आंटा ले आये, आंटा को गूथकर उपरी एकत्रित करके अग्नि प्रज्वलित किये उपरी का धूंआ बट के ऊपर गया, जिस में मधुमक्खियों का छत्ता था, धूंआ लगते ही मधुमक्खियां पागल बनी और उन दोनो संतो को आकर बींधने लगीं। वे देनो संत भागकर तालाब में कूद गये। उधर गूंथे हुए आंटे को कुत्ते एवं कौए खा गये। शाम ढल रही थी इसलिये वहाँ से बगल के गाँव में जाकर भूखे प्यासे परेशान थे। उसी समय ब्राह्मण का स्म धारण करके स्वयं महाराज आकर कहे कि आप सब भूखे प्यासे हैं मैं आप को सुखडी देता हूँ आप इसे खाकर पानी पीले। भूख-प्यास शांत हो जायेगी। ऐसा ही किया। बाद में पूछे कि आप कहाँ से आ रहे है और कहाँ जा रहे है तब स्वामीने कहा काठियावाद से आ रहे हैं कहाँ जायेंगे यह ख्याल नहीं। तब महाराज स्वयं अगल-बगल के कई गाँवो का नाम लिया, जब खांण गाँव का नाम आया तब स्वामीने कहा हाँ हमे वहीं जाना है। अब चिठ्ठी लिखर दे दीजिए। बाद में महाराज चिठ्ठी लिख कर दिये और कहे कि यहाँ से १५ मील पीछे खाण गाँव है। ऐसा कहकर अदृश्य हो गये। दो संत वहाँ से खांण गाँव गये पुनः वहाँ से गढपुर वापस आये। तब महाराज ने पूछा कि आप लोगों को कोई कष्ट तो नहीं हुआ ! तब स्वामीने कहा नहीं महाराज। महाराज ने कहा आप लोंगो को तीन दिन तक भूखे-प्यासे रहना पडा था। आंटा कुत्ते-कौए खा गये थे। आप सबकी दुःखद अवस्था देखकर हमें आना पडा था। इसकी अपेक्षा पहले से ही चिठ्ठी लेकर गये होते तो यह स्थिति न होती और मुझे आना न पडा होता। तब स्वामीने कहा महाराज भूल हो गयी।

इसलिये प्रिय भक्त ! आप को ख्याल तो आ गया होगा की थोडी भूल के कारण (आज्ञा का लोप करने के कारण) संतो को भी दुःख झेलना पडा था। इसलिए श्रीजी महाराज की आज्ञा में रहने से इसलोक का सुख भोगकर अक्षरधाम का महा सुख प्राप्त होगा

•

ओला की रतन बा

- तरलावहन अतुलभाई पोथीवाला
(अहमदाबाद)

महेसाणा जिला के कलोल गाँव का ओला गाँव महाराज के चरण रज से पूत हुआ है। ओला गाँव में रहने वाली रतनबा महाराज की एकांतिक भक्ता थी। महाराज जब जब ओला गाँव पधारते तब तब रतनबा के घर रुकते थे।

एकबार श्रीजी महाराज संत-भक्तों के साथ दंढाव्य देश में विचरण करते हुए ओला गाँव पधारे। श्रीहरि हमारे गाँव में पधार रहे है यह जानकर श्रीहरि के प्रेमी भक्त वस्ताभाई, अविचलभाई आदि भक्त गाँव के मुख्य मार्ग को ध्वज पताका बन्दनवार से अलंकृत कर दिये थे। उस समय रतनबा ने पूजन की सामग्री को तैयार करके स्त्रियों के साथ श्रीहरि के स्वागतार्थ निकल पडी। जिस प्रकार कोई माता दामाद को फूल-अक्षत से तथा अन्य सामग्री से परछन करती है, इसी तरह रतनबा महाराज को परछने लगी। परछन के समय महाराज को अपने हृदय में उतारते जा रही थीं।

इसके बाद महाराज हंस गति से संत पार्षदो के साथ रतनबा के घर पधारे। रतनबा रसोई तैयार करके प्रेम से भोजन कराई।

एकबार बरसात के समय महाराज करजीसण से ओला गाँव पधारे थे। उस समय गाँव के श्रेष्ठ भक्त गोविंदभाई बैलगाडी में श्रीहरि को बैठा कर ले आये थे। परंतु मार्ग में बैलगाडी फंस गई। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी गाडी निकली नही, इसलिए महाप्रभु बैलगाडी में से नीचे उतरकर मुकुंद वर्णी के साथ पैदल चलने लगे।

रात्रि का समय था। मुकुन्द वर्णी आगे जाकर रतनबा के आंगन में खडे हो गये। आवाज देकर रतनबा को जगाये।

हे रतनबा ! जागो आज आपके घर स्वयं पूर्ण-पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान पधारे हैं।

''महाराज आये है मेरे द्वार'' यह सुनते ही रतनबा जागकर बाहर आ गयी। दीपक जलाई, आसन बिछाई, शुद्ध जल लाकर श्रीहरि का चरण धोने लगी।

इधर मुकुंद वर्णी स्नान करके महाराज के लिये रसोई बनाने लगे। रसोई तैयार हो गयी तो विशाल थाली में परस कर बढ़े पीड़े पर महाराज के सामने लाकर रखे। रतनबा धीरे-धीरे पंखा झलने लगी। दाल, भात, दही, घी से लथपथ रोटी, दूध, कई प्रकार की सब्जी का भोजन लगाकर अंत में रतनबा को दिये। जलपान करके महाराज आसन पर विराजमान हुए। रतनबा महाराज को मुखशुद्धि दी। उस समय रतनबा को महाराज के आनन्दमय मूर्ति का दर्शन हो रहा था। निर्लिप्त भाव से उस चिन्मय मूर्ति का दर्शन करके आनन्दमय हो गयी। अक्षरधाम की यह मूर्ति मेरे घर आज पधारी है। अति आनंद के कारण आखों से अश्रुजल धारा बहने लगी। श्रीहरि की स्तुति करते हुए कहती है - हे कल्याणकारी श्रीहरि ? आप इस कलियुग में अनेकों पापियों का तथा अधर्म का नाश करने के लिये अवतारी हुए है। सद्धर्म वालो के मनोरथ को पूर्ण करते रहे हैं। आज आप मेरे घर पधार कर अपने स्वरूप का दर्शन देकर हमारे जीवन को कृत कृत्य कर दिये हैं।

महाराज रतनबा के भाव से खूब प्रसन्न हुए। इसी समय किसी मनुष्य के रोने की आवाज सुने, इसलिये रतनबा से पूछे हे रतनबा ? यह कौन रो रहा है।

आप के घर में सूतक है यह आपने पहले क्यों नही बताया ? आपके घर सूतक वाला अन्न खाने से हमें अशौच लगा है इसलिये हम दोनो प्रायश्चित करेंगे।

रतनबा ने महाराज से कहा कि हे महाराज ! सोना के स्पर्श से सूतकी मनुष्य शुद्ध होता है। आप के नाम मात्र से जहाँ शुद्धि होती है तो यहाँ सूतक कैसे स्पर्श करेगा। फिर तो आपको भी सूतक का दोष नही लगेगा, क्योंकि जगत के नियंता आप ही हैं। आपके दर्शन-स्पर्शन मात्र से यह घर शुद्ध हो गया। फिर भी आप प्रायश्चित्त की जो बात कर रहे है वह धर्म की पुष्टि के लिये है। रतनबा की ऐसी समझ सुनकर महाराज खूब प्रसन्न हुए। बाद में महाराज वहाँ से ब्राह्ममुहूर्त में उठकर स्नानादि क्रिया करके अडालज की तरफ सभी गाँवो को पवित्र करते हुए पंचाल देश की तरफ प्रस्थान किये। रतनबा की भक्ति से प्रसन्न होकर श्रीहरि अपने स्वरूप का अखंड सुख रहने का आशीर्वाद दे दिये।

●

कब श्रीहरि को हंसते देखूं

- कंचनबहन रणछोडभाई पटेल (नारणपुरा)

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंद स्वामी के समक्ष सभी संत-भक्त गढपुर में चातुर्मास में विशेष नियम लेने का संकल्प किये। उस में प्रेमानंद स्वामी प्रतिदिन आठपद रचने का संकल्प लिये।

श्रावण मास की अमावास्या के दिन सम्पूर्ण दिन वीत गया लेकिन एक पद भी बन नहीं पाया। रात्रि हो गयी। सभी सो गये। ठन्ढे वातावरण एवं निरव वातावरण में अपनी सरंगी उठाई और सा,रे,ग,म, चालू कर दिये। एक पर एक गीत के आलाप से सारे वातारण को गमगीन करते गये। मध्यरात्रि का सन्नाटा हृदय का भाव, सारंगी की सरगम तीनों एकसूर में होकर मानो नाद ब्रह्म को प्रगट करने में लग गये।

श्रीहरि अक्षरदालान में सोये हुए थे। इस प्रकार की ब्रह्मानंद सुनकर श्रीहरि जागे विना रह नही सके और आवाज सुने तो प्रेम सखी की आवाज थी -

क्यारे हवे देखुं रे हरि हंसता।
मारा मंदिरिया मां वसता ॥

यह सुनकर महाराज नींद में भी हस रहे थे। प्रेम सखी के आगे का स्वर सुनकर महाराज से रहा नही गया। वे अक्षरदालान से बाहर आ गये। प्रेमानंद स्वामी की मधुर संगीत की आवाज पर आगे बढने लगे और पहुँच गये पूनमियां कुआं के पास जहाँ प्रेमानंद स्वामी सूर बहा रहे थे।

प्रेम सखी तो हंमेशा महाप्रभु के आनंद में डूबे रहते थे। प्रेम के वशी होने से आंखो से अश्रुजल धारा बह रही थी। श्रीहरि वहाँ एकांत में एकतरफ खडे होकर यह दृश्य देखे जा रहे थे। महाराज के शरीर पर मात्र एक दुपट्टा था। दालान में मंद प्रकाश के बीच स्वामी अपनी भावना को बहायेजा रहे थे। जिस में श्रीहरि भींग रहे थे। अपने भक्त के भाव देखकर आनंदित हो रहे थे। इस तरह पूरी रात बीत गयी। प्रातः हुआ तो प्रकाश में खडे श्रीहरि को देखकर प्रेमानंद स्वामी आश्चर्य चकित हो गये। श्रीहरि को प्रेम स्वामी साष्टांग प्रणाम करने लगे। महाराज उन्हें उठाकर गले लगाये। यह दृश्य कैसा रहा होगा ?

बाद में स्वामीने पूछा महाराज ? आप यहाँ कबसे खडे हैं ? मध्यरात्रि से यहाँ खडे है। आप के इस प्रेम का आनंद ले

रहे हैं । प्रभु प्रसन्न होकर अपने उत्तरीय को प्रेम सखी को ओढा दिये । कहने लगे पूरी रात वीत गई फिर भी आप अपने पद को सुनाइये । तुरत उनके मुख से गीत निकल पडी -

क्यारे हवे देखुं रे हरि हंसता,
मारा मंदिरिया मां वसता... क्यारे ।
जरकसिया जामा पेरी ने,
गुढो रेंटो ओडी कटि कसता... क्यारे ।
फूलडा मां गरकाव थई ने,
अत्तर मां मस मसता.... क्यारे ।
मुनिवर सारुं रसोई करावीने,
पंगत मां पीरसता.... क्यारे ।
प्रेमानंद आगे गावे त्यारे,
आवे ओरा ओरा खसता... क्यारे ।

इस पद के संगीत में प्रभु को खींच लाने की ताकत है । प्रेम सखी के पास गोपियों का हृदय था । जिस में प्रभु के लिये पारावार प्रेम की लहर उठती थी । हृदय मंदिर में वसते श्रीहरि को हंसते देखने की चाहना है । जिस प्रभु के कमर में डुपट्टा बंधा हो, मस्तक पर पगडी बंधी हो वे कब दर्शन देंगे ।

भक्तों की पूजा का महाराज के गले में हार, पुष्पो के बाजूबन्द जिसकी सुगन्ध चारो तरफ फैल रही हो ऐसे भावों से ओत-प्रोत प्रेम सखी के गीत होते थे । स्वामी कहते है कि कभी कभी श्रीहरि स्वयं अपने हाथों से रसोई बनाकर परम हंसो को खिलाते थे ।

प्रेमानंद स्वामी ऐसे कीर्तन जब गाते थे तब महाराज स्वयं धीरे-धीरे चलकर आ जाते थे । आज तो महिलाओं द्वारा यह कीर्तन खूब गाया जाता है । बहने जब यह कीर्तन भाव से, प्रेम से, ताल से, हंसते हुए, नाचते हुए, गाती है तब लगता है जैसे महाराज सिंहासन पर बैठे हुए मंद मंद मुस्करा रहे हैं ।

•

साबरमती नारायणघाट की महिमा

- क्रिष्णावहन बारेवडिया (भक्तिनगर-मेमनगर)

श्री नारायणघाट तीर्थ आज का तीर्थ नहीं है बल्कि सदियों पीछे सतयुग का इतिहास देखें तो नारायणघाट श्री नरारायणदेव आदि देवों की प्रागट्य भूमि है । इस तीर्थ में एक अरब वर्ष पूर्व श्री नरनारायणदेव अवतार लिये थे । शास्त्रों के संशोधन से यह बात स्पष्ट होती है । परंतु यह साबरमती किस तरह इस धरती पर आई, इस पौराणिक देव नदी को इस धरा पर कौन लाया यह सभी पुराणों से स्पष्ट होता है । महादेवजी तथा पार्वतीजी के संवाद के स्म में यह प्रस्तुत कर रही है -

महादेवजी कहते हैं कि हे पार्वती जी ? इस साबरमती के तटपट कश्यपऋषि महान तप किये थे । घने बन के बीच आबू पर्वत के ऊपर कश्यप ऋषि तप कर रहे थे । जहाँ पर पवित्र सरस्वती नदी बहती है । एक दिन मुनि नैमिषारण्य गये थे । वहाँ सभी ऋषिगण एकत्रित होकर कथा कर रहे थे । कश्यप मुनि को देखकर मुनियों ने कहा हे ऋषि यदि आप को हम सभी पर प्रेम होतो इस प्रदेश में गंगाजी को ले आइये, वही गंगा आपके नाम से काश्यपी गंगा के नाम से जानी जायेंगी । मुनियों को प्रणाम करके कश्यप पुन: आबू आये और सरस्वती नदी के पट पर तप करने लगे । उनके तप से प्रसन्न होकर महादेवजीने वर मांगने को कहा । कश्यप मुनिने कहा हे महादेवजी ? यदि आप प्रसन्न हो तो आप अपने मस्तक की गंगा को देदीजिए । तब महादेवजीने प्रसन्न होकर अपनी जटा में से एक लट तोड़कर कहा लो ये गंगाजी । कश्यप ऋषि गंगाजी को लेकर अपने आश्रम में आये । उसी समय वहाँ पर अपने परिवार के साथ बहुत सारे ऋषि आये । कश्यप ऋषि इन गंगाजी को लाये हैं इसलिए उनका नाम आकाश गंगा हो गया । इनके दर्शन मात्र से घोर पापियों का भी मोक्ष होगा । महादेवजी पार्वती जी से कहते हैं हे देवि ! यही गंगा सतयुग में कृतवती, त्रेता में गिरिकर्णिका, द्वापर में चंदना, कलियुग में साबरमती के नाम से जानी जायेगी । जिस गंगा को मैंने भगीरथ को दिया था वही गंगा को मैं आज कश्यप ऋषि को दिया हूं ।

इस साबरमती के किनारे करीब तिरपन तीर्थ आये हुए हैं । जिसमें नारायणघाट एवं दूधेश्वर मुख्य तीर्थ हैं । ए दोनो तीर्थ अहमदाबाद में आये हुए हैं । साबरमती नदी के किनारे नारायणघाट क्षेत्र में विशाल जंगल था । जिसे पुराण में धर्मारण्य कहा गया है । इसी धर्मारण्य में पूर्व के समय में धर्म एवं भक्ति ने तप किया था । जिससे परमात्मा मार स्वस्म में प्रगट हुए थे । इसी कारण यह तीर्थ अतिशय पवित्र एवं फलदायी है । यह नारायणघाट प्राचीन काल से ही तपोभूमि के स्म में जाना जाता है । धर्म मूर्ति से लेकर दधीचि ऋषि तक इसी नदी के किनारे तप किये थे । इनकी तपस्या फलदायी बनी थी । इसीलिये नारायणघाट नाम का यह क्षेत्र आज भी प्रभावशाली एवं शांतिदाता तीर्थ क्षेत्र के नाम से जाना जाता है ।

दूसरा यह कि इस साबरमती नदी में स्नान करने से मुक्ति मिलती है । इस नदी के तट पर श्राद्ध करने का बडा महत्व है । जो अपने पितरों की मुक्ति की इच्छा से यहाँ श्राद्ध करते हैं उनके पितर मुक्त हो जाते हैं । इस नदी के दर्शन मात्र से मनुष्य पाप से मुक्त हो जाते हैं । जैसे गंगा नदी है वैसी ही यह साबरमती है । हे साबरमती देवि ! आप के गुण का वर्णन हम क्या कर सकते हैं ।

•

करजीसण में श्रीहरिकी अद्‌भुत लीला

- पटेल रेखाबहन कीर्तीकुमार (ऊंझा)

अहमदाबाद से महेसाणा रेलवे लाईन से जाते समय डांगरवा स्टेशन आता है । जहाँ से करजीसण गाँव छ किलोमीटर है । यहाँ सुंदर मंदिर है । विसाल प्रांगण के बीच में यह मंदिर प्रतिष्ठित है । इस

मंदिर में चित्र प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया है। इसके प्रांगण में उत्सव के समय बडी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं।

करजीसण गाँव में महाराज चौंतीस वार पदार्पण किये थे। जिससे यह गाँव अति पवित्र है। इस गाँव की भूमि का दर्शन करने से मनुष्य के करोड़ो जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। गाँव से उत्तर दिशा में एक सरोवर है। जिस में संतो के साथ महाराज अनेकों बार स्नान किये हैं जिससे इस सरोवर का जल भी अति पवित्र है। बगल में छोटे भाई का बगीचा है जिसमें महाराज अनोकों लीला किये हैं। सरोवर के बगल में एक कूँआ है, इस में भी श्रीहरि स्नान किया करते थे। यह भी प्रसादी का है। इसी के बगल में वरखडा का वृक्ष है इसके नीचे बैठकर अनेकों बार भोजन किये है। आज भी वह प्रसादी का वृक्ष मौजूद है। इसीके बगल में महाराज का चरणारविंद है। यही पर बट वृक्ष था जिस पर झूला डालकर श्रीहरि झूला करते थे। इस तरह यह करजीसण गाँव नाना विध श्रीहरि की लीलाओं से पवित्र हैं एवं तीर्थ है। सभी लोग दर्शन करने यहाँ पधारते है।

करजीसण गाँवं की लाल वांचने से श्रीजी महाराज बहुत प्रसन्न होते है। इस गाँव को लोगो को श्रीहरि सुखिया किये है। भक्त चिंतामणी में निष्कुलानंद स्वामी ने प्रकरण ८३ में लिखा है -

पछी काठिये सज्या के काण,
मांड्या झडु मूले घोडे पलाण।
हाहा करता गुर्जर देश,
आव्या करजीसण जई संत ॥

करजीसण गाँव के श्रेष्ठ भक्त गोविंदभाई महाराज को नमस्कार करके विनयपूर्वक कहने लगा कि हे धर्म नंदन श्रीहरि आप के साथ मैं पंद्रह दिन से हूँ इसलिये आपभी करजीसण गाँव में पंद्रह दिन तक रहे, वस्तु की चिंता नहीं कीजिये। घर में जो भी है वह आप का है। आप संतो के साथ मेरे घर पधारकर अपने चरणों से पवित्र कीजिये। छोटे भाई भी श्रीहरि से प्रार्थना करने लगे कि हे करुणा के सागर वि.सं. १८६९ की साल में गोविंदभाई के घर में पचीस मन बाजरी थी जिस में से सात शेर बाजरी प्रतिदिन निकाल कर छ महीने तक परिवारने खाया। आने वाले सभी मेहमान भी उसी में से खाते रहे। उनकी पत्नी भी पंद्रह मन बाजरी बेंच दी। गोविंदभाई ने भी दश मन बाजरी बेच दी। आज भी बाजरी घटती नहीं है। यह सब आपकी कृपा का फल है। श्रीहरि जब भी करजीसण पधारते तथा गोविंदभाई के घर को अपने चरण रज से अवश्य पवित्र करते। करजीसण में खुशाल भक्त अपने घर श्रीहरि को तथा संत पार्षदो को प्रेम से भोजन कराया बाद में श्रीहरि गढपुर के लिये निकल गये।

धनुर्मास के विशेष कार्यक्रम
दि. १६-१२-२००७ से दि. १४-१-२००८

प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त बहनों की धर्मगुरु अ.सौ. पूज्या गादीवालाजी की उपस्थिति में अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने जीव मात्र का कल्याण करने के लिये भजन स्मरण करने के लिये वर्ष में एकबार धनुर्मास सुलभ कर दिया है। शरीर को कंपाने वाला ठन्डी में सत्संगीयों का समुदाय आबाल वृद्ध नरनारी सभी उस काल में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धूनि में इतनी अधिक संख्या में उमड़ पड़ता है कि सभा मंडप मैं बैठने की जगह ही नहीं मिलती। अहमदाबाद शहर के एवं ग्राम्य के भक्तजनों को अनुरोध है कि धनुर्मास के धुनि में भाग लेने से वंचित न रहजांय, वे अवश्य पधारे।

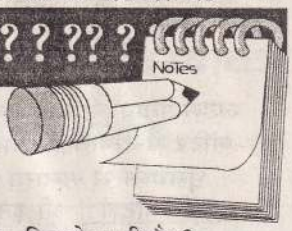
धनुर्मास के विशेष कार्यक्रम

प्रातः ५-०० बजे : रंग महल घनश्याम महाराज के सांनिध्य में धुनि
प्रातः ५-३० बजे : मंगला आरती
प्रातः ५-३० बजे : कथा-हरिगीता
प्रातः ६-०० बजे : धुनि
प्रातः ६-३० बजे : शृंगार आरती

मासिक धुनि
रु. 1500/-

दैनिक धुनि
रु. 100/-

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ ''जनमंगल स्तोत्रम्'' में शतानंद स्वामी द्वारा रचित छट्ठा श्लोक कौन है ?

प्रश्न : २ ''जीव जो साचो थईने भजन करवा मांडे तो भगवान जरूर सहाय करे'' यह उक्ति किसने कही है ?

प्रश्न : ३ श्रीमद् सत्संगीजीवन शास्त्र में ''नारायण गीता'' किस प्रकरण में, कितने अध्याय में, कितने श्लोक हैं ?

प्रश्न : ४ एक समय श्रीजी महाराज गढ़पुर से रिसा कर किसी से कहे विना जेतलपुर आकर गंगामाँ के घर छुप गये। ब्रह्मानंद स्वामी सुराखाचर के साथ श्रीजी महाराज को खोजते हुए जेतलपुर आये वहाँ उन्हें पता चल गया, तो गंगामाँ को उद्देश्य करके कौन सा मार्मिक गूढ अर्थवाला कीर्तन ब्रह्मानंद स्वामी बोले ?

प्रश्न : ५ उपलेटा गाँव का अहीर भक्त श्रीजी महाराज को क्या खिलाकर प्रसन्न किया ?

प्रश्न : ६ शिक्षापत्री के किस श्लोक में श्रुति-स्मृति के अनुसार सदाचार ही धर्म है श्रीजी महाराज ने प्रतिपादन किया है ?

प्रश्न : ७ ''लालच लागी रे बेनी लालच लागी रे, जोईने जादवराय बेनी लालच लागी रे'' - यह सुन्दर कीर्तन किसने लिखा है ?

अक्टूबर-नवम्बर २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम।

(१) हृदय में रहते है, अणु के समान सूक्ष्म है, चैतन्य रूप है, अपनी ज्ञान शक्ति द्वारा समग्र शरीर में व्याप्त है। अछेद्य अभेद्य, अजर, अमर इत्यादि जीव का लक्षण है। (२) स.गु. गुणातीतानंद स्वामीने कहा है। (३) आप कृष्णावतार में वांसुरी बजाते थे वह आता है या भूल गये ? बजाई तो हम सुने। (४) सं. १८१२ के प्रारंभ में मध्य प्रदेश के दंतिया गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम विष्णुशर्मा तथा माता का नाम विरजादेवी था। उनके पूर्वाश्रम का नाम दिनमणी शर्मा था। (५) धन्य-धन्य जेतलपुर ग्राम, वाले जेने कर्युं निजधाम। जेतलपुरधाम। (६) वह कागज दादा खाचर के दरबार में परमहंस के निवास स्थान पर, दिन उगने के समय, सं. १८७८ मार्गशीर्ष कृष्ण-१४ के दिन लिखा गया था। (७) स.गु. प्रेमानंद स्वामी।

१. हसुबहन कन्हैयालाल ठक्कर - इसनपुर
२. मनाली पुष्पा - जीरागढ
३. पटेल गोरधनभाई शंकरभाई - सोजा
४. अमृतलाल मोदी - सोजा
५. चोटलिया पुष्पा, मनीषा, रंजन - धूलकोट
६. दक्षाबहन घनश्यामभाई - सोजा
७. वीणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
८. सां.यो. भारतीबा - कालुपुर मंदिर हवेली
९. अरविंदाबहन नरेशभाई भावसार - चांदलोड़ीया
१०. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
११. शारदाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
१२. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
१३. प्रफुलाबहन एस. पटेल - उवारसद
१४. साकरबहन नटवरभाई पटेल - नांदोल
१५. सां.यो. शिल्पाबा तथा शीतलबा - स्वा.मं. सुरेन्द्रनगर
१६. सां.यो. उषाबा तथा चंद्रिकाबा - लींबड़ी
१७. परमार भानुबहन भगवानभाई, भूमिका, मीना, चंद्रेश - बोडका
१८. मीता भावेश टांक - बोडका
१९. भगवनदास वेलजीभाई सोनी - आद्रोजा
२०. माधवजीभाई हरखजीभाई - आद्रोजा
२१. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
२२. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
२३. कंचन बाबूभाई पटेल - रतनपुर-मूलीदेश
२४. विनोद पी. पटेल - वहेलालवाला - अहमदाबाद
२५. निशाबहन घनश्यामभाई - वाछगढ
२६. चंद्रिका, ज्योत्सना, कृपा - जीरागढ
२७. वाघेला हितेष हेमराजभाई - जामसर

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है। इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा। जिसको सभी लोग जानलें।

२. प्रश्न का उत्तर स्वच्छ अक्षर में होना आवश्यक है, जिससे सरलता से उसे पढा जा सके। पत्र के ऊपर एक ही व्यक्ति का नाम होना आवश्यक है, उसी का नाम अंक में छापा जायेगा।

प्रश्नपेटी में नियमित भागलेने वाले भक्तजनों को नूतन वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण के साथ हार्दिक धन्यवाद। प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री के जन्मोत्सव प्रसंग पर उन्हीं के वरद हाथों से जो संमान मिला हैं उसके आप सभी सहभागी हैं। आप सभी विशेष बडी संख्या में प्रश्नपेटी विभाग में भाग लेंगे ऐसी आशा के साथ। (संपादक - शा. भक्तिनंदनदास)

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीपावली का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

काली चौदश : श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन आरती परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिपूर्वक संपन्न किया गया था। इस प्रसंग पर दर्शन करने कई हरिभक्तगण पधारे थे।

समूह शारदा पूजन : ता. ९-११-०७ के शुक्रवार के दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीहरि के ७ वें वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के वरद् हाथों से शारदा पूजन वेद विधिपूर्वक शास्त्रोक्त विधि से मंदिर के सभा मंडप में धूमधाम से संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर हजारो धर्म प्रेमी तथा श्रद्धालु व्यापारी हरिभक्तों ने पूजन का महालाभ लेकर अपना व्यवहार श्रीजीमहाराज द्वारा रचित शिक्षापत्री में की हुई आज्ञा अनुसार करने का संकल्प किया था। इस प्रसंग का दूरदर्शन तथा सीटी इन केबल की केमेरा टीमने सुंदर प्रसारण करके समग्र गुजरातीयों को भी उसके दर्शन करवाये थे। अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजीने इस प्रसंग पर सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था।

नूतन वर्ष तथा अन्नकूटोत्सव : सं. २०६४ नूतन वर्ष के शुभ मंगल प्रभात पर प्रातः ५-०० बजे सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने स्वयं उतारी। अहमदाबाद शहर के हजारो हरिभक्त तथा पूज्यनीय संतोने नूतन वर्ष के प्रारंभ के शुभ मंगल दिन तथा मंगल घड़ी में श्री नरनारायणदेव अलौकिक दर्शन करके नयें वर्ष के शुभ दिवस का प्रारंभ किया था।

उसके बाद प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री अपनी बैठक में अपने आश्रितजनो को दर्शन प्रदान करते थे। आज के दिवस भक्तों की भीड़ भी अपरंपार थी। उसके बाद श्रृंगार आरती पर ६-३० बजे श्रीहरि के तीन अपर स्वरूपो के वरद् हाथों से हुई तब हजारो संत-हरिभक्तों ने देव दुर्लभ दर्शन करके जीवन कृतार्थ किया था। उसके बाद सभा मंडप में बिराजमान हुए थे। दोपहर १२-०० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारी थी। दोपहर के १२-०० से ५-०० बजे तक अन्नकूट दर्शन हुए थे। शहर तथा ग्राम्य विस्तार के हरिभक्तो की भीड़ बड़ी संख्या में दर्शन हेतु आयी थी। समूह शारदा पूजन, अन्नकूट उत्सव आदि प्रसंगो में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार शा. स्वामी रामानुजदासजी, शा.स्वामी हरिप्रकाशदासजी (चराडवा महंतश्री), वी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा शा.स्वामी धर्मकिशोरदासजी तथा पार्षद अनिल भगत, श्री कल्पेशभाई आदि संत मंडल तथा कोठार स्टाफ तथा बापुनगर के हरिभक्तों की सेवा प्रेरणास्य थी।

- शा. धर्मकिशोरदास

जेतलपुर धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीजी महाराज के दिव्य चरणों से अंकित महान तीर्थभूमि जेतलपुर धाम में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से काली चौदश के दिन मास्तियज्ञ का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग के मुख्य यजमान प.भ. किरीटभाई गोकलभाई पटेल (लवारपुर) तथा सह यजमान प.भ. राजेन्द्रसिंह ए. राओल (मीतली) थे।

नूतन वर्ष के दिन अहमदाबाद शहर तथा आसपास के गाँव के हरिभक्तों ने संकल्प कर्ता श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्णा महाराज की मंगला आरती। श्रृंगार आरती तथा ११ बजे से शाम के ५-०० बजे तक अन्नकूट दर्शन बड़ी संख्या में करके संवत २०६४ के वर्ष का प्रारंभ जीव के मोक्ष तथा कल्याण ग्राम्य के लिये शुभ दिन बन गया था। इस प्रसंग पर महंत के.पी. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था।

- शा. भक्तिनंदनदास

श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाळा जेतलपुर के प्रांगण में मनाया गया शारदीय महोत्सव

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित तथा प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चलती श्री स्वामिनारायण महा विद्यालय में प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ उपस्थिति में भव्य तथा आकर्षक शारदीय महोत्सव ता. १७-१०-०७ से ता. २०-१०-०७ तक मनाया गया था। इस प्रसंग पर नित्य के यजमान धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री थे इसीलिय उनके वरद् हाथों से ठाकुरजी तथा विद्यादेवी श्री सरस्वती माता का पूजन-आरती की गयी थी।

उसके बाद विद्यार्थियों द्वारा श्लोकान्तक्षरी का कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में स्वामी हरिप्रकाशदासजीने प्रथम स्थान प्राप्त करके प.पू. महाराजश्री के हाथों में विजेता कप प्राप्त किया था। उसके बाद उपस्थित वयोवृद्ध संतोने आशीर्वचन प्रदान किये।

आगामी फेब्रुआरी २००८ में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार बहुत ही भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सभी के सहयोग पुरुषार्थ से अहमदाबाद के टाउन होल में मनाया जायेगा। ऐसी घोषणा संचालकश्री शा. हरिॐप्रकाशदासजीने की थी। इस प्रसंग पर ठाकुरजी को भोग लगाया गया तथा संतगण-विद्यार्थियों की रसोई कालुपुर मंदिर के ट्रस्टी श्री प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल के समधी श्री रतीभाई (बावलावाले) की तरफ से थी। इसीलिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने उनको प्रसादी का हार पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किये थे। अंत में सभी महाप्रसाद ग्रहण करके श्रीहरिनाम स्मरण के साथ विदा हुए थे।

- शा. स्वा. हरिॐप्रकाशदास, जेतलपुर

श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाल का गौरवपूर्ण गुजन

करीब २० वर्षो से संस्कृत एकादमी गुजरात द्वारा आयोजित विविध विषयों की वक्तृत्व स्पर्धा में इस वर्ष हमारे श्री

स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थियोंने तृतीय स्थान प्राप्त करके पाठशाला तथा संप्रदाय का गौरव बढाया था । इस शुभ प्रसंग का समाचार जानकर प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री बहुत प्रसन्न होकर पाठशाला की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु अंत:करण पूर्वक आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

विजयी होनेवाले विद्यार्थी

१. स्वामी कुंजविहारीदासीज गुरुस्वामी जयप्रकाशदासज़ी (वेदांत - प्रथम) २. तुषारप्रफुलकुमार लहेरु(ज्योतिष - प्रथम) ३. स्वामी हरिवल्लभदासजी गुरु स्वामी नारायणप्रसाददासजी - महेसाणा (गोलाफेंक - प्रथम) ४. पार्षद श्याम भगत गुरुस्वामी निरन्नमुक्तदासजी (१०० मीटर दोड - प्रथम) ५. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी गुरु स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कर्मविचार - द्वितीय) ६. स्वामी विवेकसागरदासी गुरु स्वामी प्रेमवतीनंददासजी (निबंध लेखन - द्वितीय) ७. स्वामी हरिवल्लभदासजी गुरु स्वामी नारायणप्रसादासजी - महेसाणा (चक्रफेंक - द्वितीय)

असारवा में (पुराने स्वा.बाग) वीर हनुमानजी का सुवर्ण कलश ध्वजदंड उत्सव मनाया

धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का पुराना निवास स्थान जहाँ अभी श्री सहजानंद गुरुकुल कार्यरत है । उस दिव्य तथा पवित्र दिव्य भूमि में आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने अपने कुल देवता श्री हनुमानजी की स्थापना करके प्राण प्रतिष्ठा की थी । मंदिर अत्यंत जीर्ण हो जाने के कारण प.पू. बडे महाराजश्री के संकल्प तथा इच्छा से स्वयं रस लेकर निज मंदिर का शिल्प शास्त्रानुसार पत्थर से भव्य मंदिर का निर्माण करवाया ।

नूतन मंदिर का सुवर्ण कलश ध्वजदंड महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २७-१०-०७ के शुभ दिन पर धूमधाम से संपन्न हुआ ।

प्रात: प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से सुवर्ण कलश ध्वजदंड का पूजन तथा मास्तियज्ञ प्रारंभ हुआ था । यज्ञ में १०१ यजमान परिवारने एकसाथ भाग लिया था । शाम को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से यज्ञ की पूर्णाहुति तथा श्री हनुमानजी का षोडशोपचार पूजन-आरती की थी ।

इस प्रसंग में गुरुकुल के संचालक स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजीने समग्र व्यवस्था का आयोजन किया था। प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री भी दर्शन के लिये पधारी थी ।

- सत्यप्रकाशदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आंगन में भव्य शरदोत्सव मनाया गया

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तीर्थोत्तम भूमि नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २५-१०-०७ के दिन रात्रि में ८ से १२ पर्यन्त भव्य शरद महोत्सव तथा रास गरबा का आयोजन धूमधाम से संपन्न हुआ था । जिसके यजमान पद का प.भ. विठ्ठलभाई शिवरामभाई (रिद्रोलवाले अभी अहमदाबाद के) पटेल तथा उनके सुपुत्र श्री महेन्द्रभाई तथा श्री भरतभाई आदि परिवारने लाभ लिया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री रात्रि १०-३० बजे पधारे तब हरिभक्तगण बहुत ही आनंदित हो गये थे । उनके वरद् हाथों से ठाकुरजी की आरती उतारी गयी थी ।

भाईयों तथा बहनोने भिन्न-भिन्न स्म से संप्रदाय के नियम अनुसार रास-गरबा का आयोजन किया था । इस प्रसंग पर हरिभक्तों ने बड़ी संख्या में उपस्थिति दी थी । रास में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय नंबर प्राप्त करनेवाले को प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से इनाम प्रदान किया हुआ था । अंत में रात्रि में पधारे हुए सभी भक्तजनो को दूध चिउड़ा प्रसाद के स्म में दिया गया था । यहाँ के उत्साही युवान महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा संत मंडलने सुंदर व्यवस्था की थी ।

- शा. चैतन्यदास

करजीसण मंदिर में ५ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

दंढाव्य प्रदेश का मुख्य प्रसादी का गाँव करजीसण के भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-११-०७ रविवार के दिन प्रात: ८-३० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे उस समय वहाँ के हरिभक्तों में श्री हनुमानजी के मंदिर से उत्सव मनाते हुए स्वागत किया था । इसके बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर में विराजमान ठाकुरजी के पांचवे पाटोत्सव की आरती करके सभी भक्तों को अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था ।

प्रासंगिक सभा में सभा संचालन शा. विश्वप्रकाशदासने किया था । अन्य विद्वान संतोने प्रेरक प्रवचन किया ।

इसके बाद सभी को आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने कहा कि जिस प्रकार हम मुख्य मंत्री के साथ खड़े हो तो हमारी भी महत्ता बढ जाती है । इसी तरह हमारी भी स्थिति है, जब हम भगवान के दर्शनार्थ उनके समीप में आते हैं तो हमारा सुख भी बढ जाता है । इसके साथ दूसरा उदाहरण देतेहुए कहे कि जगत में जैसे झूठे व्यसन करते हैं इसी तरह भगवान के मंदिर में आने का व्यसन कीजियेगा बाद में फल हमें बताइयेगा ।

श्री प्रहलादभाई पटेल ने यजमानो की तरफ से प.पू. आचार्य महाराजश्री के चरणों में भक्तों के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना की । इसके साथ आचार्यश्री में भगवान की मूर्ति का साक्षात्कार करने का वर्णन भी किया । पार्षद जशु भक्तने आभार विधि किया । अंत में सभी भक्तजन प्रसाद लेकर विदा हुए ।

- प्रहलादभाई वी. पटेल

मालवण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पंचमहाल जिला के झाड़ी देश के मालवण गाँव में तथा अगल-बगल के गाँवो में स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा सुखनंददासने रात्री में सत्संग सभा करके उनमें सांप्रदायिक नीति-नीयम बताकर भगवान नरनारायणदेव का शरण स्वीकार कराया ।

संत यहाँ शरदोत्सव का आयोजन किये

थे। जिसमें मालवण, माछीवाडा, लालखाट की मुवाडी, मुनखाट का मुवाडा, पाणखाण, दाल खाट की मुवाडी, आटा मोटा दरोडा, केला मूल, संतरामपुर, हाथपालिया इत्यादि के भक्तजन शरदोत्सवमें भाग लिये थे। नंद-संतो द्वारा रचित भजन-कीर्तन गाये थे। हरिभक्त रास किये थे। सभी को दूध चिउड़ा का प्रसाद दिया गया था। पार्षद हार्दिक भगत एवं वहाँ के भक्तों की सेवा सराहनीय थी।

- शा. छपैयाप्रसाद

बालासिनोर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बालासिनोर गाँव में भाद्रमास के समय अहमदाबाद से. शा. विश्वस्वरूपदास निष्कुलानंद काव्य अंतर्गत पुरुषोत्तम प्रकाश की कथा करके धर्म कुल की महिमा समझाये थे।

जलझीलणी एकादशी के दिन ठाकुरजी की पालकी को लेकर बालासिनोर के सड़कों पर उत्तम उत्सव करते हुए घूमाया गया था। जिसके यजमान घनश्याम किराणा वाला का परिवार था। इस प्रसंग पर संत स्वामी तथा पा. रमेश भगत सुंदर सेवा किये थे। *- नवीनभाई ट्रस्टीश्री*

उवारसद

उवारसद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अ.नि. पू.शा. स्वामी हरिनारायणदासजी के शिष्य श्री ईश्वरभाई मगनभाई पटेल परिवार की तरफ से सुंदर आयोजन किया गया था। जिसमें कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर, माणसा, जमीयतपुरा आदरुज, नारायणघाट, बोपल, कलोल से संत मंडल पधारकर भजन-कीर्तन का सुंदर लाभ दिया था। यजमान की तरफ से भोजनादिक व्यवस्था की गयी थी। इस प्रसंग पर श्री घनश्यामभाई पटेल ने सभा संचालन किया था। *- को. श्री उवारसद*

दहेगाँव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव में ता. ८-१०-०७ के दिन मासंत यज्ञ एवं हनुमानजी के पूजन का कार्यक्रम किया गया था। जिस में बहुत सारे भक्त उपस्थित थे। श्री विनुप्रसाद एम. पटेल की तरफ से अन्नकूट का महोत्सव किया गया था।

- कोठारी अरविंदभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती

पं.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से कोटेश्वर के शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा संत मंडल ने कथा-वार्ता का सुंदर लाभ प्रदान किया था। जिसमें श्रीमद् सत्संगिजीवन धीरज आख्यान तथा श्रीमद् भागवत आदि शास्त्रो की कथा की थी। *- रावजीभाई टी. पटेल*

नरोडा आदीश्वरनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री कीआज्ञा-आशीर्वाद से शरद पूनम को नंद संतो द्वारा रचित रास-गरबा का आयोजन किया गया था। कथा १० से १२ में प्रथम क्लास उतीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

ठाकुरजी के अन्नकूट के लिये हरिभक्तों ने अपने घर से भिन्न भिन्न पक्वान बनाकर लाये थे। जिस का अन्नकूट में भोग लगाया गया। *- ठाकरसीभाई चावड़ा*

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से महंत शा. स्वामी हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से बोपल मंदिर सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से एक दिवस के सत्संग शिबिर का आयोजन एकलव्य फार्म हाऊस मणीपुर, गलोड़ीया रोड पर ता. ७-१०-०७ के रविवार को सुबह ७ से शाम के ५ बजे तक किया गया।

जिसमें संतो मे शा. व्रजवल्लभदासने 'सत्संग का केफ' श्री हरिनंदन स्वामीने 'सेवा' श्री सुव्रत स्वामीने 'संतकृपा' सत्यसंकल्पदासने 'श्री स्वामिनारायण मंत्र के धून' की महिमा तथा शा. स्वामी धर्मवल्लभदासजीने 'श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य प.पू. आचार्य महाराजश्री की महिमा, देव मंदिर की महत्ता तथा श्री नरनारायणदेव का आश्रय' आदि के विषय में संतोने दृष्टांत के साथ ज्ञान पूर्वक विवेचन करके नये मुमुक्षुओ को भी मूल संप्रदाय की वास्तविकता को समझाया।

बच्चों द्वारा भिन्न भिन्न विषय पर नाटिकायें, नृत्य, रास-गरबा जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। इस प्रसंग में मुख्य यजमान प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल (स्कीम कमिटी सभ्य) श्री खुशालभाई पटेल (धुमा) की तरफ से महाप्रसाद तथा फार्म हाउस की सेवा की गई थी। श्री लक्ष्मणभाई सोमाजी ठाकोरने स्टेज मंडप की सेवा की थी। इस शिबिर का आयोजन श्री धीरजभाई काकड़ीया द्वारा दूरदर्शन पर ता. ९-१० तथा १०-१० के दिन सुबह में प्रसारण किया गया था।

- प्रविणभाई उपाध्याय

छपैया में सत्संगिजीवन ज्ञानयज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा लक्ष्मीस्वरूपा प..पू. गादीवालाश्री की शुभ उपस्थिति में छपैयाधाम में सत्संगिजीवन पंचाह ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया गया था।

मोरबी की सांख्ययोगी उषाबा तथा सांख्ययोगी राजकुंवरबा की प्रेरणा से मोरबी के सत्संगियोंने कथा के यजमान पद पर रहकर वक्ता शा. स्वा. हरिजीवनदासजी के मुख से कथा का शुभारंभ कराकर यजमानों में प्रसन्नता दिखाई दी थी। सोने में जिस प्रकार सुगंध मिल जाती है उसी प्रकार पू. बडी गादीवालाश्री पाँच दिन तक रुककर कथा का श्रवण किया तथा बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का स्वयं अभिषेक करके सत्संगि बहनो को सत्संग तथा दर्शन का दिव्य लाभ दिया। जन्मभूमि में कथा श्रवण, छपैया की पंचतीर्थी, स्नान तथा भजन करके हरिभक्तों में नये वर्ष को सफल बनाया था।

छपैया महंत स्वामी स.गु. वासुदेवानंद ब्रह्मचारीने यजमान परिवार को आशीर्वाद के साथ भोजन तथा समस्त व्यवस्था का उत्तम आयोजन किया था। इसके साथ अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी का सहयोग भी उत्तम था। *- कनु भगत, छपैया*

आकरुंद गाँव प.पू. आचार्य महाराजश्री का प्रथम आगमन

साबरकांठा जिले के धनसुरा तहसील के आकरुंद गाँव के श्रद्धालु हरिभक्तों का संकल्प था कि उनके गाँव में धर्मवंशी

आचार्य महाराजश्री के पवित्र चरण कमल पधारे तो ग्रामवासियों का जीवन धन्य हो जायेगा । इस हेतु वहाँ कथा नित्य करने वाले स्वामी सत्यंसकल्पदासजीने श्रद्धालु भक्तों को कथा-वार्ता करके देव-महिमा का माहात्म्य समझाया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ग्रामजनो ने धूमधाम से स्वागत करके शोभायात्रा निकाली थी । प.पू. महाराजश्री प्रथम रामजी मंदिर में पधारकर आरती उतारी उसके बाद श्री स्वामिनारायण मंदिर का खात मुहूर्त किया । इस प्रसंग पर धनसुरा डेमाई, बायड, सापरा तथा रडोदरा गाँव के हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लिया । शा. छपैयादासजी तथा शा. सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से यह समग्र आयोजन किया गया था ।- *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

कन्नीपुर में सत्संग सभा

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद के मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी के मार्गदर्शन से कनीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में कोठारी शा. धर्मकिशोरदास, धरियावाद के महंत स्वामी तथा साधु चैतन्यस्वरूपदास (वहेलाल) आदि संत मंडलने हरिभक्तों को कथामृतपान तथा कीर्तन भक्ति का अलभ्य लाभ लिया था । - *कोठारी शा. रामानुज स्वामी*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर
(I.S.S.O. अमेरिका)

अमेरिका में कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री नरनारायणदेव, श्री घनश्याम महाराज तथा श्री राधाकृष्णदेव के पाटोत्सव के उपलक्ष में उसे ८ सितंबर तक श्रीहरिगीता पारायण, महाभिषेक, महापूजा तथा अन्नकूट आदि कार्यक्रम संपन्न हुआ था ।

शा. स्वा. घनश्यामदासजी ने हरिगीता पारायण की कथा की थी ।

कथा के प्रारंभ से ही रोज शाम को प.पू. महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के दर्शन का अलौकिक लाभ हरिभक्तों को प्राप्त हुआ था । हरिगीता की पूर्णाहुति की आरती एकादशी के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी । प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन आरती यजमान परिवारने की थी ।

महापूजा, अभिषेक, पारायण तथा अन्नकूट के यजमान परिवार का स्वागत मंदिर द्वारा किया गया था ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक विधिपूर्वक संपन्न हुआ था । जिसके दर्शन करने हरिभक्तों की भारी भीड़ उपस्थित थी । उसके बाद प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से महापूजा की आरती उतारी गयी थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने गांधीनगर मंदिर के पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी स्वमी की सत्संगिभूषण कथा की सीडी का विमोचन किया गया । जिसके यजमान प.भ. विनोदभाई मीस्त्री परिवार बने थे । उनकी तरफ से निःशुल्क हरिभक्तों को सीडी विमोचन किया गया । जिसके यजमान प.भ. विनोदभाई मीस्त्री परिवार बने थे । उनकी तरफ से निःशुल्क हरिभक्तों को सीडी प्रदान की गयी ।

प्रासंगिक सभा में संतो ने प्रेरक प्रवचन दिये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि मंदिर में जब आओ तब भगवान का सुख अवश्य प्राप्त करना चाहिए, सत्संग करना तथा करवाना चाहिये, मंदिर की प्रत्येक प्रवृतियों में सहभागी होना चाहिये । तथा इष्टदेव के दर्शन करके जीवन धन्य बनाना चाहिये । कथावार्ता का आनंद लेना चाहिये । तथा सभी के सहयोग से मंदिर के कार्य होते हैं । इस प्रकार ही सत्संग का विकास आगे बढेगा । पाटोत्सव में तो भगवान में तो भगवान को प्रसन्न कर सकते हैं । तो ऐसे शुभ असवर पर भगवान में तन-मन तथा धन से लीन हो जाये ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

''सेवा'' मेडीकल क्लिनिक की तरफ से ब्लड ड्राईव के लिए ३८ हरिभक्तोंने ब्लड का दान किया था । उन सभी को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये थे ।

- प्रविणभाई शाह

केन्नेडा (I.S.S.O.) में श्री स्वामिनारायण मंदिर हेतु संपादन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री जून महिने में यहाँ पधारे तब हमारे मंदिर की जगह देखी । जिस में वेस्ट युनिट नं. ९ टोरोन्टो की जगह उन्हें बहुत पसंद आयी थी । सर्वावतारी श्रीजी महाराजश्री को वहाँ बिराजमान होने की इच्छा हो तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्रीने संकल्प किया तो वही सिद्ध होता है । उसी प्रकार हमारे प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. ११-१०-०७ की रात्रि में ८-३० बजे मंदिर के लिये युनिट का पझेशन मिला था । उस स्थान को सजाकर वहाँ पर एक हरिभक्तों द्वारा अर्पण किया हुआ सिंहासन रखा गया ।

ता. २१-१०-०७ विज्या दशमी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्राकट्योत्सव दिन पर सुंदर सिंहासन में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान तथा श्री नरनारायणदेव को बिराजमान करके आरती उतारी गयी ।

उसके बाद सभा में नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन भक्ति तथा कथा वार्ता की गयी । तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन करके समूह आरती की गयी । यजमान हरिभकर्त्तों के आरती का लाभ लिया । फोन द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री ने दिव्य आशीर्वाद दिये । प्रत्येक शनिवार की शाम को ४ से ७ सत्संग सभा नित्य होती है । - *भाईलालभाई पटेल*

लेस्टर (U.K., I.S.S.O.)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

लेस्टर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २१-१०-०७ के रविवार की विज्या दशमी के शुभ दिन पर हमारे प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३५ वाँ प्राकट्योत्सव हरिभक्तोंने साथ मिलकर

मनाया । इस प्रसंग पर सुंदर राग में नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन-भक्ति का गान हुआ । प.पू. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन करके ३५ दिपको की आरती हरिभक्तों ने समूह में उतारी थी ।

प्रासंगिक सभा में श्री नरनारयणदेव युवक मंडल के श्री हितेनभाई हिराणी, मंदिर के पूजारी रसिकभाई जानी तथा सहमंत्री श्री किरण भावसार ने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था। इस शुभ दिवस पर दो प्रसंग जुड़े थे ।

I.S.S.O. का स्थापना दिवस भी इसी दिन होने के कारण उस प्रसंग की विस्तृत माहिती दी गयी । सत्संगी बहनो की तरफ से बनायी गयी केक हमारे वयोवृद्ध हरिभक्त प.भ. जयंतीलाल पटेल तथा प.भ. हेमराजभाई चोटलीया ने काटकर प.पू. आचार्य महारजश्री के नाम का जयघोषा किया था । प्रमुखश्री योगेशभाई पटेल ने आभार विधि की थी ।

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की वृद्धि होती ही जा रही है ।

दीपावली ता. ९-११-०७ के दिन समूह शारदा पूजन शाम को ७ से ८ तक धूमधाम पूर्वक किया गया ।

नूतन वर्ष के दिन ठाकुरजी को भिन्न अन्नकूट का भोग लगाया गया । प्रातः ६ बजे से हरिभक्तगण दर्शन करने आने लगे । प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी का नूतन वर्षाभीनंदन पत्र सभा में पढ़कर सुनाया गया ।

- किरण भावसार

वोशिंग्टन डी.सी. चेप्टर (I.S.S.O.)

वोशिंगटन डी.सी. चेप्टर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग सभा नियमित होती है । २३ सितंबर रविवार को जलझीलणी एकादशी को २ घंटे तक सत्संग सभा हुई । उसी तरह ६ अक्टूबर शनिवार एकादशी की शाम को २ घंटे सत्संग सभा चली थी ।

१० नवम्बर को नूतन वर्ष के दिन सतत ५ घंटे सभा चली थी । ठाकुर जी को भोग में नाना बिध ज्युस समर्पित किया गया था । बाद में धुनि कीर्तन के साथ २७३ वचनामृत का पाट किया गया था । इसके बाद अन्नकूट की आरती उतारी गयी थी ।

हरिभक्तोंने २७३ वें वचनामृत को सुनकर भजन-कीर्तन-धुनि-नित्य नियम समूह में किया था ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से यहाँ के हरिभक्त सामूहिक नाना विध कार्य क्रमकरके श्रद्धापूर्वक भगवत भजन करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं ।

- कनुभाई पटेल

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध संत स.गु. स्वा. भक्तिप्रसाददासजी गुरु स्वामी बालकृष्णदासजी ता. २९-११-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

बलोल-भाल : पार्षद श्री वनराजभगत (प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का अंतरंग सेवक) तथा प.भ. मावजीभाई चावडा के पिताजी श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान एवं धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के अत्यंत कृपापात्र श्री मोहनभा चावडा (उ. ९८) वर्ष) सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करते हुए ता. १६-११-०७ के दिन अक्षरनिवासी हुए हैं ।

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के निष्ठावान अग्रणी हरिभक्त श्री दानुभा मावजीभा परमार श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. १०-११-०७ के दिन अक्षरनिवासी हुए हैं ।

श्री करशनभाई मोतीभाई वणोल श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए १४-१-०७ के दिन अक्षरनिवासी हुए हैं ।

श्री गोविंदभाई मोतीभाई सुर की धर्मपत्नी अ.सौ. शारदाबहन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं । सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गद्दी तथा मूली श्री राधाकृष्णदेव के निष्ठावान श्री बचुभा (श्री गणेशभा) स्माभा खेर ता. २७-११-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है । मूलीदेश के सत्संग में बड़ी कमी हुई है ।

जूना देवलीया (मूलीदेश) : श्री मोहनभाई पमाभाई पटेल (उम्र ७५ वर्ष) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. १६-११-०७ के दिन अक्षरनिवासी हुए हैं । इनका जीवन भक्त चिंतामणी एवं वनचामृत परायण था । अनि. शा.स्वा. गोपालचरणदासजी के समागम से वचनामृत का गूढ अध्ययन किये थे । देव आचार्य तथा सत्संग के पक्षधर थे । ऐसे हरिभक्त के अक्षरवास से मूली देश के सत्संग में बडी कमी हुई है ।

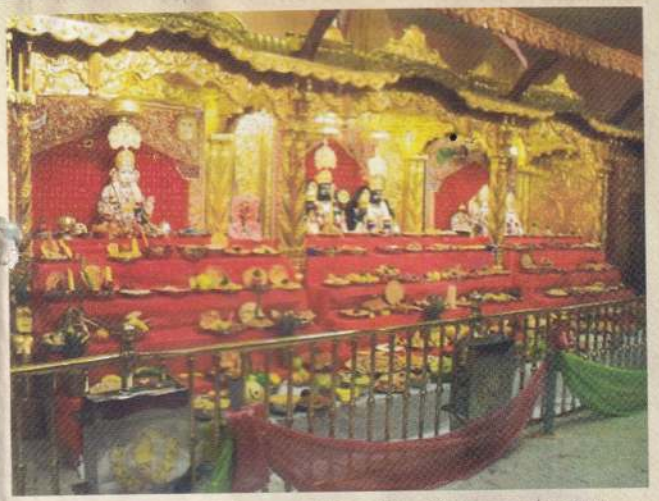
कोठा : श्री प्रहलादभाई अमथीदास पटेल ता. १३-९-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

समौ : श्री चौधरी गणेशभाई कचराभाई ता. २-११-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : अपने अहमदाबाद मंदिर में सेवा कार्य करते हुए (स्कीम कमेटी के सदस्य) श्री नटवरलाल मोहनलाल ठक्कर ता. २२-११-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

वडु : श्री स्वामिनारायण मंदिर में वर्षो तक कोठारी के रूप में सेवा करते हुए वयोवृद्ध श्री हरगोवनदास माधवदास पटेल नूतन वर्ष के शुभ दिन ता. १०-११-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग का अन्नकूट दर्शन



कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री



नारायणघाट मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में शरदोत्सव धामधूम से मनाया गया



बालवा में श्री नरनारायण ट्रेकटर्स में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण



प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण चल रहे काम की तस्वीर



प.पू. बडे महाराजश्री जहाँ दररोज विराजते है वह श्री स्वामिनारायण म्युझियम का कार्यालय

Registered under RNI - NO - GUJHIN/2007/20226 Permitted to post
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08





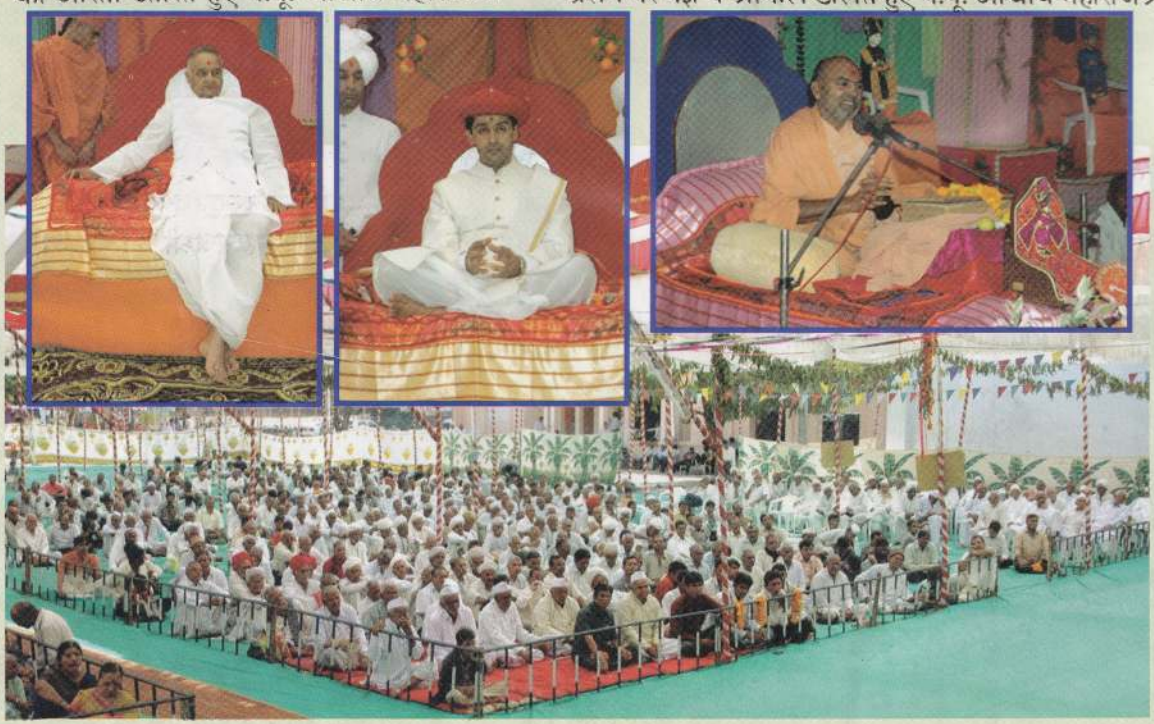
सिद्धपुर मंदिर में प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री और
प.पू. बड़े महाराजश्री आरती उतारते हुए



सिद्धपुर मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट
की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री



सिध्धपुर नूतन शिखरी श्री स्वामिनारायण में मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा
प्रसंग पर यज्ञ में श्रीफल डालते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री



सिद्धपुर मंदिरकी सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री तथा
कथामृत पान कराते हुए महंत शा.स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी